रत्न और ज्योतिष

फ्यूचर पॉइंट द्वारा प्रकाशित

संपादक : अरुण बंसल
लेखिका : रेखा कल्पदेव

विषय सूची

रत्न और ज्योतिष

औषधि मणि मंत्राणां-ग्रह नक्षत्र तारिका।
भाग्य काले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत्। ।

औषधि, रत्न एवं मंत्र ग्रह जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं। मनुष्य की जन्मपत्री में कोई न कोई ग्रह कमजोर और कुछ ग्रह बली होते हैं और इनके अनुसार ही जातक के भाग्य में परिवर्तन आता रहता है।

अशुभ ग्रहों को शुभ बनाना या शुभ ग्रहों को ओर अधिक शुभ बनाने की मनुष्य की सर्वदा चेष्टा रही है। ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों की स्थिति व बलाबल के अनुसार अनेक प्रकार के उपाय बताए गए हैं जैसे - रत्न धारण, रुद्राक्ष धारण, देव दर्शन, मंत्रोच्चारण, यंत्र व वास्तु स्थापना, दान, जड़ी बूटी उपयोग, स्नान, विसर्जन, हवन, जमीन में गाड़ना आदि। प्रत्येक उपाय का विशेष उपयोग है।

जीवन में उपायों की उपयोगिता और प्रकार

रत्न : रत्न ग्रह से आ रही रश्मियों को सोखकर शरीर को प्रदान करता है। इसलिए शुभ ग्रहों की रश्मियों को अधिक मात्रा में प्राप्त करने के लिए उन ग्रहों के रत्नों को धारण किया जाता है। यदि ग्रह कमजोर हो तो रत्न धारण से तुरंत लाभ प्राप्त होता है।

रुद्राक्ष : शिवजी के आंसुओं से रुद्राक्ष की उत्पत्ति मानी गई है। अतः इसे धारण करने से शिवजी की पूर्ण कृपा प्राप्त होती है। दुर्लभ एक मुखी रुद्राक्ष तो पूर्ण रूप से शिवजी का ही प्रतीक है। रुद्राक्ष 1 से 21 मुखी तक पाए जाते हैं। इनमें 4, 5 व 6 मुखी रुद्राक्ष आम तौर पर पाए जाते हैं।

इनमें भी 5 मुखी ही सबसे अधिक प्राप्त होता है। जो ग्रह अशुभ स्थान पर बैठा हो, उसकी अशुभता कम करने के लिए व शुभता बढ़ाने के लिए रुद्राक्ष धारण करते हैं। अतः जिन ग्रहों के रत्न धारण नहीं कर सकते उनके रुद्राक्ष धारण करना श्रेयस्कर होता है।

रुद्राक्ष	ग्रह	लाभ	रुद्राक्ष	लाभ
1 मुखी	सूर्य	उच्चपद	10 मुखी	व्यवसाय
2 मुखी	चंद्र	शांति हेतु	11 मुखी	लाभ
3 मुखी	मंगल	मंगल शांति	12 मुखी	विदेश यात्रा
4 मुखी	बुध	बुद्धि प्राप्ति	13 मुखी	नजर दोष
5 मुखी	गुरु,	धन	14 मुखी	शनि शांति हेतु
6 मुखी	शुक्र	वैवाहिक सुख	15 मुखी	अर्थ
7 मुखी	शनि	नौकरी सुख	16 मुखी	राहु दोष मुक्ति
8 मुखी	राहु	राजनैतिक लाभ	17 मुखी	सर्वार्थसिद्धि
9 मुखी	केतु	संघर्ष से मुक्ति	18 मुखी	सर्व दोष मुक्ति
19 मुखी	सर्वकार्य सिद्धि			
20 मुखी	धनार्जन व व्यावसायिक उन्नति			
21 मुखी	सर्वदोष निवारण व शनि दोष हनन हेतु पहनना चाहिए			

इसके साथ ही कुछ विशेष प्रकार के रुद्राक्ष प्राप्त होते हैं। जैसे - गणेश रुद्राक्ष-विघ्न नाशक, गौरी शंकर रुद्राक्ष-वैवाहिक सुख, गौरी गणेश रुद्राक्ष-संतान सुख व त्रिजुटी रुद्राक्ष-सर्वमंगल हेतु धारण किए जाते हैं।

देव दर्शन : किसी भी ग्रह की अशुभता को न्यून करने में उस ग्रह के प्रतिष्ठित देव दर्शन से लाभ प्राप्त होता है। जैसे-मंगल व शनि के लिए हनुमान जी की, गुरु के लिए विष्णु जी, बुध के लिए गणेश जी, शुक्र के लिए दुर्गा जी, चंद्र के लिए शिव जी या कृष्ण जी, सूर्य के लिए श्री रामजी आदि।

मंत्रोच्चारण : यदि ग्रह वायु तत्व राशि में बैठा हो, तो उसके मंत्रोच्चारण से शीघ्र लाभ प्राप्त होता है। ग्रह के तांत्रिक मंत्र विशेष लाभदायी हैं। पूर्ण कष्ट निवारण के लिए सवा लाख मंत्रों का जप, तदुपरांत हवन इत्यादि करना चाहिए।

हवन : अशुभ ग्रहों को शुभ बनाने के लिए हवन करना चाहिए। यदि ग्रह अग्नि तत्व राशि में बैठा है तो फल शीघ्र प्राप्त होते हैं।

यंत्र स्थापना : ग्रह या देव मंत्र जप के साथ यदि उसका यंत्र भी स्थापित कर लिया जाए तो जप का असर अनेक गुणा व अधिक समय तक प्राप्त होता है। कहते हैं यंत्र में देव मूर्ति से सौ गुणा ऊर्जा होती है। यंत्र भी मंत्र द्वारा जाग्रत होने के पश्चात ही फल दायक होते हैं।

वास्तु स्थापना : अनेक दोषों को दूर करने के लिए विशेष चित्र, घंटिया, पिरामिड, आदि की स्थापना की जाती है जो कि वातावरण की अशुद्ध ऊर्जा को समाप्त कर शुद्ध ऊर्जा को बढ़ाते हैं।

दान : जो ग्रह अशुभ व बलवान हो, उनकी वस्तुओं के दान से उनकी अशुभता का हनन होता है जैसे- सूर्य के लिए लाल मसूर दाल का दान, चंद्रमा के लिए जल का दान, मंगल के लिए गुड़ का दान, बुध के लिए हरे चारे का दान, गुरु के लिए पीली दाल का दान, शुक्र के लिए चावल, शनि के लिए सरसों के तेल, राहु के लिए काले कंबल व केतु के लिए सप्त धान्य का दान।

जड़ी-बूटी उपयोग : प्रत्येक ग्रह की कुछ जड़ी बूटियां हैं। ग्रहों को बलवान करने के लिए उनकी जड़ी बूटियों का सेवन करना चाहिए या पानी में भिगोकर उनसे स्नान करना चाहिए।

विसर्जन : किसी भी जल तत्व राशि स्थित ग्रह की अशुभता को दूर करने के लिए उस ग्रह की वस्तुओं का विसर्जन करना उत्तम उपाय है। जैसे-सूर्य के लिए लाल कपड़े में बांधकर मलका-मसूर की दाल का विसर्जन, चंद्रमा के लिए नदी में दूध विसर्जन, मंगल के लिए गुड़ विसर्जन, बुध के लिए साबुत मूंग विसर्जन, गुरु के लिए हल्दी की गांठ, शुक्र के लिए दही व खीर विसर्जन, शनि के लिए काले चने, राहु के लिए कोयले व केतु के लिए नारियल विसर्जन।

जमीन में गाढ़ना : यदि ग्रह भूमि तत्व राशि में हो तो ग्रह के पदार्थ भूमि में गाड़ने से उसकी अशुभता समाप्त होती है। कई बार अनजाने में हम शुभ ग्रह की वस्तुओं का विसर्जन या दान आदि कर देते हैं जिससे उसके बल में क्षीणता आती है व शुभता में न्यूनता आती है। अतः ग्रह किस राशि में किस भाव में स्थित है उसके अनुसार उसकी शुभता अशुभता का ज्ञान कर उपाय चयन करना चाहिए जिससे उस ग्रह के पूर्ण लाभ प्राप्त हो सकें।

रत्नों की उपयोगिता

सृष्टि में विभिन्न प्रकार के रत्नों का भण्डार मानव को कल्याणकारी मंगल कामनाओं के साथ वरदान स्वरूप प्राप्त हुआ है। व्यक्ति रत्नों को अपने भाग्य को चमकाने के लिए धारण करता है, रत्न द्वारा वह स्वयं को सुखी तथा सम्पन्न रखने की चाहत रखता है। रत्नों में चमत्कारी शक्ति है जो ग्रहों के विपरीत प्रभाव को कम करके ग्रह के बल को बढ़ाते हैं।

प्राचीन समय से ही भाग्य को बलवान बनाने के लिए रत्नों को धारण किया जाता रहा है। रत्नों में अदभुत शक्ति होती है। ग्रहों तथा रत्नों का क्या सम्बन्ध है इसे समझकर ही हम रत्नों के लाभ को प्राप्त कर सकते हैं। ग्रहों में व्यक्ति के सृजन एवं संहार की जितनी प्रबल शक्ति है उतनी ही शक्ति रत्नों में ग्रहों की शक्ति घटाने तथा बढ़ाने की भी होती है। रत्न कि शक्ति को आकर्षण की विकर्षण की शक्ति कहते हैं।

रत्नों में ग्रहों की रश्मियों, रंगों, चुम्बकत्व की शक्ति होती है। रत्न व्यक्ति के भाग्य को शिखर तक पहुंचा सकता है। रत्न के अनुकूल प्रभाव को पाने के लिए उचित प्रकार से जांच करवाकर ही रत्न धारण करना चाहिए। ग्रहों की स्थिति के अनुसार रत्न धारण करना चाहिए। रत्न धारण करते समय ग्रहों की दशा एवं अन्तर्दशा का भी ख्याल रखना चाहिए। रत्न पहनते समय मात्रा का ख्याल रखना आवश्यक होता है अगर मात्रा सही नहीं हो तो फल प्राप्ति में विलम्ब होता है। इसलिए रत्न धारण करते समय यह विचार अवश्य कर लेना चाहिए कि जिस रत्न को धारण करने जा रहे हैं।

वह अपने से सम्बन्धित ग्रह की शक्ति को आकर्षित करने एवं परावर्तित करने की क्षमता रखता है। इसी प्रकार शुभ ग्रहों के अशुभ के शुभत्व पूर्ण रश्मियों को आकर्षित करके ग्रह की शक्ति बढ़कर भाग्य को चमका सकती है।

रत्न ग्रह को बली करने के लिए पहनाया जाता है। किसी ग्रह से संबंधित पीड़ा हरने के लिए, अन्यथा जिस ग्रह की दशा या अंतर्दशा चल रही हो, उस ग्रह का रत्न धारण करना चाहिए।

लेकिन यह आवश्यक है कि वह ग्रह जातक की कुंडली में योगकारक हो, मारक न हो। अष्टमेंश यदि लग्नेश न हो, तो सर्वदा त्याज्य ही है। योगकारक ग्रह यदि निर्बल हो, तो रत्न अवश्य धारण करना चाहिए।

ग्रहों में व्यक्ति के सृजन एवं संहार की जितनी प्रबल शक्ति है उतनी ही शक्ति रत्नों में ग्रहों की शक्ति घटाने तथा बढ़ाने की होती है। वैज्ञानिक भाषा में रत्नों की इस शक्ति को हम आकर्षण या विकर्षण शक्ति कहते हैं। रत्नों में अपने से संबंधित ग्रहों की रश्मियों, चुम्बकत्व शक्ति तथा वाइब्रेशन (कम्पन) को खींचने की शक्ति होती है तथा परावर्तित कर देने की भी शक्ति होती है।

रत्न की इसी शक्ति के उपयोग के लिए इन्हें प्रयोग में लाया जाता है। हम जिस भौतिक युग में जी रहे हैं, वहां व्यक्ति जल्दी प्रगति की सीढ़ियां चढ़ना चाहता है। इसलिए वह रत्न, ज्योतिष एवं मंत्र का सहारा लेता है।

रत्नों की उत्त्पति का पौराणिक संदर्भ

ज्योतिष ग्रन्थों तथा कुछ अन्य प्राचीन विवरणों में रत्नों के जन्म के विविध पौराणिक प्रसंग भी मिलते है। इससे विभिन्न रत्नों की उत्पत्ति के संबंध में कैसी-कैसी धारणायें प्रचलित रही है। इसकी जानकारी होती है। ज्योतिष के प्रमुख और सर्वमान्य ग्रंथ बृहत्संहिता में आचार्य वराहमिहिर ने पौराणिक विवरण को आधार बनाकर रत्नों के संबंध में प्रकाश डाला है।

प्रसिद्ध दैत्यराज बलि, जिसे छलने के लिए विष्णु ने वामन रुप धारण किया था, की अस्थियों से कुछ रत्नों की तथा वृत्रासुर के आतंक से देव वर्ग को मुक्त करने के लिए अपनी अस्थियां दान करने वाले महर्षि दधीचि की अस्थियों से भी अनेक रत्नों की उत्पत्ति हुई है। पौराणिक मतानुसार, उपर्युक्त 21 रत्नों की उत्पत्ति का मूल आधार राजा बलि का शरीर है।

उन्हीं के अंग-प्रत्यंग से, जब वे आहत होकर धराशायी हुए, इन रत्नों का जन्म हुआ। आचार्य वराहमिहिर ने इस प्रसंग की व्याख्या अपने ग्रंथ बृहत्संहिता में की है। उक्त ग्रंथ के रत्नाध्याय में, उन्होंने विभिन्न रत्नों की उत्पत्ति इस प्रकर बतायी है।

1. हीरा : राजा बलि के कपाल खंडों से यह रत्न उत्पन्न हुआ है।
2. मोती : बलि के मनस्तत्व से मोती का जन्म हुआ।
3. माणिक्य : इसकी उत्पत्ति बलि के रुधिर से हुई है।
4. पन्ना : इसकी उत्पत्ति में बलि का पित्त प्रमुख कारक रहा।
5. प्रवाल : बलि के समुद्र में गिरे हुए रक्त से यह निर्मित हुआ।
6. पुखराज : यह बलि के मांस से उत्पन्न रत्न है।
7. नीलम : बलि के नेत्रों की पुतलियों से नीलम उत्पन्न हुआ।
8. चंद्रकांत मणि : इसकी उत्पत्ति बलि की आंखों से हुई है।
9. गोमेद : बलि के मेंद से गोमेद की रचना हुई।
10. फिरोजा : राजा बलि की नसों से फीरोजा उत्पन्न हुआ।
11. लहसुनिया : इस रत्न का निर्माण राजा के यज्ञोपवीत से उस समय हुआ जब वह देवताओं के द्वारा छिन्न कर दिया गया।
12. भीष्मपाषाण : इसकी रचना बलि के वीर्य से हुई है।
13. मासर मणि : यह मल-मेंद से उत्पन्न हुई।
14. लाजावर्त : इस रत्न का जन्म बलि के केशों से हुआ।
15. उलूक मणि. : राजा की जीभ ने इस रत्न को जन्म दिया।
16. पारस : राजा बलि का वक्ष फट जाने पर उनका हृदय भूमि पर गिरा, उससे पारस का जन्म हुआ।
17. स्फटिक मणि : राजा बलि के स्वेद का यह दूसरा रुप है।
18. उपलक मणि : यह रत्न बलि के कफ से पैदा हुआ।
19. भीष्मक : राजा का सिर कट जाने पर उसके अगले भाग (मस्तक) से यह रत्न निकला था।
20. तैल मंणि : त्वचा भाग से इसकी उत्पत्ति हुई।
21. घृतमणि : यह रत्न राजा बलि के कुक्षि भाग से उत्पन्न हुआ था। इसे करकौतुक भी कहते हैं।

84 रत्न विवरण तालिका

रत्नों के नाम	ग्रह	विवरण
माणिक्य	सूर्य	यह जितना अधिक लाल रंग का होता है, उतना ही कीमती होता चला जाता है। माणिक्य हल्के गुलाबी रंग से गहरे लाल तथा श्याम आभायुक्त भी मिलते हैं।
हीरा	शुक्र	हीरा सफेद, पीला, गुलाबी, लाल व कई रंग में मिलता है।
पन्ना	बुध	पन्ना हरे तोते के रंग का, मोर की गर्दन के रंग का, हरी झांई लिये होता है। इसमें जाला होना अनिवार्य है।
नीलम	शनि	गहरे नीले रंग का नीलम इंद्रमणि तथा हल्के नीले रंग का बीच में सफेदी लिए जलनील कहलाता है।
पुखराज	गुरु	पुखराज पीला, सफेद, हरा, लाल एवं नीले रंग में आता है।
लहसुनिया	केतु	इसमें बिल्ली की आंख जैसा सूत या एक रेखा रहती है, जो घुमाने पर इधर-उधर घूमती नजर आती है।
गोमेद	राहु	इसका रंग गोमूत्र जैसा होता है। आजकल काले, पीले, लाल तथा कोका कोला जैसे रंग के गोमेद मिल रहे हैं।
मोती	चंद्र	मोती सफेद, गुलाबी, पीलापन लिये तथा काले रंग में मिलते हैं। आजकल 'कल्चर्ड' मोती अधिक मिलता है।
मूंगा	मंगल	यह लाल, सिंदूरी तथा सफेद रंग में मिलता है।
लालड़ी	सूर्य	गुलाबी, नरम, पारदर्शक, संपूर्ण कांति वाला उपरत्न है।
फिरोजा	शु., श.	यह फिरोजी रंग का आसमानी जैसा फकीरी रत्न है।
रोमनी	सूर्य	यह गहरा लाल, कुछ-कुछ श्यामलता लिये होता है।
जबरजद्द	बुध	यह हल्के से लेकर गहरे हरे रंग का होता है। अच्छा जबरजद्द कभी-कभी पन्ने का भान करा देता है।
उपल	शुक्र	सफेद रंग का, घुमाने पर विभिन्न रंग के तारे दिखाई देते हैं।
तुरमली	बुध	हरा, लाल, पीला, नीला, सफेद कई रंगों में मिलता है।
नरम	सूर्य	यह गहरा लाल तथा श्याम रंग लिये होता है।

सुनेला	गुरु	स्वर्ण रंग जैसा गहरा पीला व भार में हल्का होता है।
कटैला	शनि	इसको जामुनिया भी कहते हैं। यह भार में हल्का होता है।
संगसितारा	गुरु	यह गेरुए रंग का, कुछ गहरा कत्थई रंग लिए होता है। इसमें अनगिनत सोने के छींटे जैसे तारे दिखाई देते हैं।
स्फटिक	शुक्र	यह बर्फ जैसा सफेद रंग का, ठंडा रत्न है। स्फटिक की माला, श्री यंत्र, शिव लिंग एवं विभिन्न मूर्तियां आती हैं।
चंद्रमणि	चंद्र	बर्फानी सफेद, गुलाबी, नीला, पीला व काले रंग में मिलता है।
तामड़ा	सूर्य	यह गहरा कत्थई रंग लिये होता है।
लूधया	मंगल	हरे रंग का गुम पत्थर है खरल के काम आता है।
मरियम	चंद्र	यह सफेद रंग का और अच्छी पॉलिश का होता है।
मकनातीस	बुध	इसे चकमक पत्थर कहते हैं।
सिंदूरिया	मंगल	कुछ सफेदी लिये, गुलाबी रंग का, चमकदार होता है।
नीली	शनि	हल्के से गहरे नीले रंग का होता है और नरम होता है।
धुनेला	शनि	यह सुंदर आभायुक्त, धुंए के रंग का होता है।
बैरूज़	बुध	बैरूज़ का रंग हल्का हरा व पन्ने के रंग जैसा होता है।
मरगज	बुध	यह हल्का हरापन लिए होता है।
पितौनिया	शनि	मलिन पीला, नीला रंग लिए, हरे रंग का तथा लाल रंग के छींटे लिये ग़ुम और सख़्त रंग का होता है।
बांसी	बुध	यह हल्के हरे रंग का होता है।
दुर्वेनज्फ	मंगल	धानी रंग का गुम पत्थर है, फर्श के काम आता है।
सुलेमानी	बुध	काले रंग का पत्थर होता है व इसमें सफेद डोरा होता है।
आलेमानी	राहु	यह सुलेमानी जाति का भूरा डोरा वाला पत्थर है।
जजेमानी	राहु	यह सुलेमानी जाति का भूरा डोरा वाला पत्थर है।
सावोर	बुध	यह हरे रंग का होता है एवं इस पर डोरा रहता है।
तुरसावा	सूर्य	समुद्री पानी की आभा, श्वेत, हरा, लाल, हल्का होता है।
अहवा	सूर्य	गुलाबी रंग का बड़े-बड़े छींटें वाला होता है।

अबरी	शनि	काला एवं पीला रंग, अब्रवाला होता है।
लाजवर्त्त	शनि	यह नीले रंग का होता है एवं इस पर सफेद छींटे होते हैं।
कुदूरत	शनि	काले रंग का एवं इस पर सफेद रंग के गहरे दाग होते हैं।
चित्ती	शनि	काला, पीला, सफेद डोरे वाला, लहसुनिया होता है।
संगसन	शुक्र	यह चिकना, कठोर, अपारदर्शक सफेद अंगूरी होता है।
लास	बुध	यह मारबल जाति का पत्थर है।
मारबल	बुध	अनेक रंग के फर्श एवं मूर्तियां बनाने के काम आता है।
दाना फिरंग	बुध	गहरे हरे रंग का जिस पर गुर्दे जैसी आकृति बनी होती है।
कसौटी	शनि	काले रंग का व सोने की जाँच के उपयोग में आता है।
दारचना	शनि	कत्थई रंग पर नीले धूमिल छींटे वाला होता है।
हकीक	बुध	हरापन लिये हुए पीले रंग का जिसकी मालाएं बनती हैं।
हालन	चंद्र	गुलाबी रंग का, हिलाने पर हिलता हुआ दिखाई देता है।
सीजरी	चंद्र	सफेद रंग का, काले रंग के वृक्ष की आकृति होती है।
मुबेनज्फ	चंद्र	यह सफेद रंग का जिस पर बाल के समान रेखा होती है।
कहरुवा	सूर्य	लाल पीले रंग का, नरम, पारदर्शक वृक्ष का गोंद होता है।
झरना	चंद्र	यह मटिया रंग का पत्थर है।
संगबसरी	शनि	इसका उपयोग नेत्रों के लिए सुरमा बनाने में होता है।
कांतला	चंद्र	यह सफेद, पानीदार, चिकना, पारदर्शक पत्थर, तुरमुली के समान रंग में कांसला भी कहलाता है।
मकड़ा	शनि	हल्का काले रंग, जिसके ऊपर मकड़ी का जाला होता है।
संगीया	चंद्र	यह सेलखड़ी से मिलता-जुलता नरम पत्थर है।
गूदड़ी	सूर्य	सीमेंट कांक्रीट समान पीले रंग का जिससे फर्श बनती है।
कांसला	चंद्र	यह तुरमली जाति का, सब्ज, मेंला, सफेद रंग का होता है।
सिफरी	शनि	आसमानी अपारदर्शक पत्थर, दवा के काम आता है।
हदीद	राहु	काला, भूरापन लिए, वजन में भारी, इससे दवाएं बनती हैं।
हवास	बुध	सुनहलापन लिए हरे रंग का पत्थर, दवा में काम आता है।

सींगली	सूर्य	यह स्याह, इसमें छः कलियों वाले सितारे दिखते हैं।
ढेंडी	शनि	रंग काला होता है। इसके खरल व प्याले बनाये जाते हैं।
हकीक	शनि	यह सभी रंगों में मिलता है। यह पहनने से लेकर माला एवं विभिन्न प्रकार की मूर्तियां बनाने के काम आता है
गौरी	गुरु	यह हकीक से मिलता-जुलता धारी वाला है। इससे माला, मूर्तियां बनाने के खरल बनते हैं। यह सख्त होता है।
सीया	शनि	यह काला पत्थर होता है व मूर्ति बनाने के काम आता है।
सीमाक	सूर्य	यह लाल रंग का, पीलापन लिये, छींटायुक्त होता है।
मूसा	चंद्र	यह पत्थर सफेद में मटियापन लिये होता है।
पनघन	सूर्य	यह हल्का कालापन लिये, गुलाबी रंग का होता है।
डूर	राहु	इसका रंग कत्थे जैसा होता है। खरल बनाये जाते हैं।
तिलियर	शनि	इसका रंग काला, उस पर सफेद छींटे और खरल बनते हैं।
खारा	शनि	यह काला, हरापन लिये होता है। इसके खरल बनते हैं।
पाए जहर	बुध	इसका रंग बांस जैसा। इसके घाव पर लगाने से ठीक हो जाता हैं।
सीर खड़ी	चंद्र	मिट्टी के रंग वाला होता है। इससे खिलौने बनाये जाते हैं।
जहरमोहरा	बुध	हरापन लिए सफेद। इसके प्याले में जहर प्रभावहीन हो जाता है।
रवाल	सूर्य	इसका रंग लाल नीला। यह दवा बनाने के काम आता है।
रात रतूवा	शनि	इस लाल रंग के पत्थर को रात में आने वाले ज्वर के समय बगल में बांधने से लाभ होता है।
सोहन मक्खी	सूर्य	स्वर्ण मक्षिका, कंकर समान, हल्का पीला जिसकी दवा बनती है।
हजरते	शनि	सफेद मिट्टी के समान, पेशाब की बीमारी में लाभ देता है।
सुरमा	शनि	काला होता है व नेत्रों का सुरमा बनाने के काम आता है।
पारस	-	यह दुर्लभ पत्थर है जिसे लोहे को स्पर्श करने पर लोहा सोना बन जाता है।

नवरत्न की विशेषताएं

माणिक्य

माणिक्य सूर्य ग्रह का रत्न है। माणिक्य रत्न को संस्कृत में पदमराग, उर्दू में रुगल, हिंदी में माणिक्य, मराठी में माणिक्य, फारसी में इसे याकूत कहा जाता है। माणिक्य को सूर्य के दुष्प्रभाव कम करने के लिये पहना जाता है। माणिक्य सामान्य रुप लाल, गुलाबी, रक्तवर्णी, फिका गुलाबी इत्यादि रंगों में पाया जाता है। कई रत्नों को सामान्य व्यक्ति केवल रंगों से पहचानता है। रत्नों को लेकर व्यक्ति में सामान्य भ्रम की स्थिति पाई जाती है।

कुछ लोग रंग के अनुसार ही रत्नों को पहचानते है। जैसे-पीले रंग के रत्न को सामान्य व्यक्ति पुखराज समझ सकता है। नीले रंग के रत्न को नीलम समझना, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। अनेक रत्न अलग-अलग रंगों में पाये जाते है। माणिक्य मुख्यतः छ भुजाओं के आकार में पाया जाता है।

धारण के लाभ

माणिक्य सूर्य का प्रतिनिधित्व करता है। सूर्य से प्राप्त होने वाले फलों के लिये माणिक्य धारण किया जा सकता है। सूर्य से पिता का सुख, शारीरिक सुख, राजनीति में स्थान, पदोन्नती, बिजली, प्रकाश, अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा, इत्यादि विषयों के लिये माणिक्य धारण करना चाहिए।

माणिक्य शुभ मुहूर्त समय पर धारण करने पर उपरोक्त सभी विषयों के फल व्यक्ति को प्राप्त होने की संभावनाएं बनती है। इसलिये व्यक्ति में आरोग्य शक्ति में वृद्धि करने के लिये माणिक्य धारण करना लाभकारी रहता है। वही कार्य क्षेत्र में अपने उच्चाधिकारियों का पूर्ण सहयोग प्राप्त न होने पर भी यह रत्न धारण किया जा सकता है।

औषधि गुण

विशेष परिस्थितियों में माणिक्य को रक्त बढाने के लिये धारण किया जा सकता है। जिन व्यक्तियों के स्वास्थय में शीघ्र कमी होती रहती है। उन सभी को माणिक्य धारण करने से लाभ प्राप्त होता है।

इसके प्रभाव से वायु नाशक, उदररोग, तपेदिक इत्यादि में भी कमी होती है। इन रोगों में स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करने के लिये माणिक्य रत्न को धारण करना चाहिए।

माणिक्य को हृदय रोग, रक्तचाप, दिल की असामान्य धड़कन, बेचैनी, नेत्र रोग, दृष्टिदोष (दायीं आंख एक), भय, हृदय रोग के कारण हुई दुर्बलता, रक्त की निष्क्रियता, शारीरिक ऊर्जा, आत्मविश्वास, हड्डी के रोग, मधुमेंह, ज्वर, पित्त रोग, फेफड़े के रोग, मधुमेंह, अजीर्ण, मानसिक रोग, मंदगिनी, कैंसर, अपेण्डीसाइटिस आदि रोगों के निवारण हेतु धारण किया जा सकता है।

विशेष शक्ति

माणिक्य धारण करने पर व्यक्ति के मन से कुविचार दूर रहते हैं। माणिक्य के विषय में यह अवधारणा है की माणिक्य धारण किया हुआ हों, तथा व्यक्ति पर कोई कष्ट आ रहा हों तो माणिक्य का रंग बदल जाता है जिससे व्यक्ति को इससे संबन्धित पूर्व सूचना प्राप्त हो जाती है।

माणिक्य को धारण करने से व्यक्ति की आर्थिक स्थिति में सुधार की संभावनाएं बनती है। माणिक्य के शुभ प्रभाव से व्यक्ति की धार्मिक आस्था में वृद्धि हो सकती है। इसके फलस्वरुप उसका मन धार्मिक क्रियाओं में अधिक लग सकता है।

मोती

चन्द्र कर्क राशि के स्वामी है तथा चन्द्र के शुभ फल प्राप्त करने के लिये मोती रत्न धारण किया जाता है। मोती को संस्कृत में मुक्ता, इंदुरत्न आदि नाम से पुकारा जाता है। इस रत्न को उर्दू, मराठी व हिन्दी में मोती कहा जाता है।

धारण के लाभ

मोती चन्द्र का रत्न है। चन्द्र को मातृसुख, मन, घर से दूर प्रवास करना, आयात-निर्यात, दूध से बने पदार्थ, व्यापार, प्रेम आदि विषयों के लिये चन्द्र रत्न मोती धारण किया जा सकता है। इनमें से किसी भी विषय वस्तु का सहयोग प्राप्त करना हों तो व्यक्ति के द्वारा मोती धारण करना लाभकारी रहता है।

मोती उन व्यक्तियों को भी धारण करना चाहिए जिन्हें शीघ्र क्रोध आता है। क्रोध में कमी करने में यह रत्न विशेष सहयोगी होता है। मन को शान्त रखने के लिये भी यह रत्न धारण किया जा सकता है। मोती धारण करने से व्यक्ति की एकाग्रता में वद्ध होती है।

औषधि गुण

मोती की भस्म का सेवन व्यक्ति के बल में वृद्धि करती है। इससे मन को शीतलता प्राप्त होती है। मोती की भस्म को नेत्र रोगों, तपेदिक, खांसी, रक्तचाप, हृदय रोग, वायुविकार आदि रोगों में प्रयोग किया जा सकता है। चिकित्सा क्षेत्र में मोती को जिन रोगों के निवारण के लिये प्रयोग किया जा सकता है।

उसमें पत्थरी रोग होने पर व्यक्ति को शहद के साथ इसकी भस्म का सेवन करना चाहिए। आज के समय में मोती की भस्म का प्रयोग सौन्दर्य प्रसाधनों में किया जाता है। मोती की भस्म का सेवन करने से क्रोध में कमी होती है। चिकित्सा जगत में मोती की भस्म के प्रयोग से दांतों का पीलापन, धब्बे दूर करने में सहयोग प्राप्त होता है। मोती की भस्म को चेहरे की चमक बढाने के लिये प्रयोग किया जाता है।

मोती धारण करने से स्त्रियों के अनेक रोग, मिर्गी, मानसिक रोग, उन्माद, नेत्र रोग अथवा (बायीं आंख के रोग), वीर्य दोष, रक्त दोष, पाण्डुरोग, अत्यधिक रक्तस्त्राव, कफ, छाती के रोग, ट्यूमर, भेंगापन, सन्निपात, प्रदर, रतौंधी, रक्ताम्लत, कैल्शियम की न्यूनता से पनपे रोग, श्वांस, खांसी, टांन्सिल्स, दंत रोग, मूत्र विकार, वीर्यदोष, सर्दी, बवासीर, पथरी, मुंह के रोग, उदर विकार, जोड़ों का दर्द, हृदय, फोड़े, फुंसी आदि रोगों में कमी होती है।

विशेष शक्तियां

मोती के विषय में यह कहा जाता है की मोती को धारण करने से सभी मानसिक विकारों में कमी होती है। प्रेम-प्रसंगों में मोती को धारण करने से इस विषय में सफलता प्राप्त होने की संभावनाएं बनती है। इसके अलावा मोती धारण करने से व्यक्ति के स्वभाव के मृदुता के भाव में वृद्धि होती है।

मूंगा

मूंगा मंगल ग्रह का प्रतिनिधि रत्न है। इसे विभिन्न नामों से पुकारा जाता है यथा-मूंगा, भौम-रत्न, प्रवाल, मिरजान, पोला तथा अंग्रेजी में इसे कोरल कहते हैं। मूंगा मुख्यतः लाल रंग का होता है। इसके अतिरिक्त मूंगा सिंदूरी, गेरुआ, सफेद तथा काले रंग का भी होता है।

मूंगा एक जैविक रत्न होता है। मूंगा समुद्र के गर्भ में लगभग छः-सात सौ फीट नीचे गहरी चट्टानों पर विशेष प्रकार के कीड़े, जिन्हें आईसिस नोबाइल्स कहा जाता है, इनके द्वारा स्वयं के लिए बनाया गया घर होता है। उनके इन्हीं घरों को मूंगे की बेल अथवा मूंगे का पौधा भी कहा जाता है।

बिना पत्तों का केवल शाखाओं से युक्त यह पौधा लगभग एक या दो फुट ऊंचा और एक इंच मोटाई का होता है। कभी-कभी इसकी ऊंचाई इससे अधिक भी हो जाती है। परिपक्व हो जाने पर इसे समुद्र से निकालकर मशीनों से इसकी कटिंग आदि करके मनचाहे आकारों का बनाया जाता है।

मूंगे के विषय में कुछ लोगों की धारणा कि मूंगे का पेड़ होता है किंतु वास्तविकता यह है कि मूंगे का पेड़ नहीं होता और न ही यह वनस्पति है। बल्कि इसकी आकृति पौधे जैसी होने के कारण ही इसे पौधा कहा जाता है।

वास्तव में यह एक जैविक रत्न होता है। मूंगा समुद्र में जितनी गहराई पर प्राप्त होता है, इसका रंग उतना ही हल्का होता है। इसकी अपेक्षा कम गहराई पर प्राप्त मूंगे का रंग गहरा होता है।

धारण के लाभ

मूंगा धारण करने से धारक का साहस बढ़ता है। यह रत्न व्यक्ति को प्रयासों के प्रति गतिशील रहता है। इसके प्रभाव से बल, साहस, निर्णय लेने की क्षमता और दृढ़ विश्वास बढ़ता है।

बच्चों को नजर दोष से बचाने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है। यह पराक्रम में वृद्धि करता है और आलस्य को दूर करता है। मूंगा रत्न अपने धारक का साहस बढ़ता है।

शत्रुओं का सामना करने की हिम्मत देता है क्योंकि यह रत्न मनोबल को बेहतर करता है। मूंगा धारण करने वाले व्यक्ति में निडरता और आत्मविश्वास रहता है। स्वयं में नेतृत्व का गुण बढाने के लिये मूंगा हितकारी रहता है।

औषधि गुण

मूंगा रत्न रक्त विकारों का निवारण करता है, यह मिर्गी तथा पीलिया रोगियों के लिए मूंगा पहनना हितकारी साबित होता है। स्त्रियों में रक्त की कमी और मासिक धर्म, और रक्तचाप जैसी परेशानियों को नियंत्रित करने में भी मूंगा अत्यंत लाभकारी रहता है। इसके अतिरिक्त शुगर रोगियों का मूंगा धारण करना शुगर रोग पर नियंत्रण रखने में सहयोगी रहता है। मांसपेशियों से संबंधित दिक्कतों को दूर करने में मूंगा लाभकारी रहता है।

रक्तदोष जैसे - रक्त की अशुद्धता, निम्नता आदि, मानसिक एवं मस्तिष्क संबंधी विकार, मिर्गी, उन्माद, स्नायु तंत्र संबंधी दोष, कब्ज, हड्डियों के अनेक रोग, बवासीर, मज्जा, आंत, अस्थमा, गर्भपात, शल्य, घाव, जलन, प्रदर, कर्णरोग, चर्मरोग, आलस्य, भूख-प्यास की न्यूनता और बच्चों का सूखा रोग।

विशेष शक्तियां

मूंगा धारण करने से व्यक्ति को नजर दोष (नजर लगाना) तथा भूत-प्रेतादि का भय नहीं रहता। इसीलिए प्रायः छोटे बच्चों के गले में मूंगे के दाने डाले जाते हैं।

धारण करने से पूर्व

मूंगा चमकदार, साफ, स्वच्छ निर्दोष एवं चिकनापन लिये होना चाहिये। कभी भी टुटा/फुटा स्क्रेच किया हुआ गड्डेदार, घीसा हुआ मूंगा धारण नही करना चाहिए।

पन्ना

पन्ना रत्न गहरे हरे रंग का होता है। बुध ग्रह की पीड़ा शांत करने के लिए पन्ना धारण करने की सलाह दी जाती है। पन्ना रत्न को संस्कृत भाषा में हरितमणि अथवा मरकत अथवा अश्वगर्भ या गोरुण अथवा गरलारि आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है।

देवनागरी भाषा में पन्ना एवं बँगला भाषा में पाना नाम से सम्बोधित किया जाता है मराठी भाषा में पाँचू तथा गुजराती भाषा में पीलू नाम से सम्बोधित करते हैं। फारसी भाषा में जमुर्रद तथा अंग्रेजी में इसको एमराल्ड नाम से सम्बोधित किया जाता है। समस्त नवग्रहों में बुध ग्रह का प्रतिनिधि पन्ना है।

पन्ना रत्न एक अति प्राचीन, बहुप्रचलित एवं मूल्यवान रत्न है। ज्योतिष शास्त्र के मतानुसार यदि किसी व्यक्ति की कुंडली में बुध ग्रह बली हो तो ऐसी स्थिति में सम्बंधित व्यक्ति यदि पन्ना रत्न धारण कर लें तो इस प्रकार बुध ग्रह के शुभ प्रभाव को बढ़ाया जा सकता है।

धारण के लाभ

पन्ना धारण करने से दिमाग की कार्य क्षमता तीव्र हो जाती है और धारक पढ़ाई, लिखाई, व्यापार जैसे कार्यो में सफलता प्राप्त करता है। विद्यार्थियों को अपनी कुंडली का निरिक्षण किसी अच्छे ज्योतिषी से करवाकर पन्ना अवश्य धारण करना चाहिए क्योंकि हमारे शैक्षिक जीवन में बुध ग्रह की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है। अच्छी शिक्षा बुध की कार्यकुशलता पर निर्भर है।

यदि आप एक व्यापारी है और अपने व्यापार में उन्नति चाहते है तो आप पन्ना धारण कर सकते है। हिसाब-किताब के कामों से जुड़े जातकों को भी पन्ना अवश्य धारण करना चाहिए क्योंकि एक अच्छे गणितज्ञ की योग्यता बुध के बल पर निर्भर करती है।

औषधि गुण

यह गर्भवती महिलाओं के लिए लाभकारी होता है क्योंकि इसे धारण करने से उन्हें प्रसव के समय ज्यादा तकलीफ नहीं होती है। यह मानसिक तनाव को भी कम करता है और रक्तचाप सामान्य बनाये रखता है। यदि पन्ना रत्न आपको उपहार में दिया गया है, तो यह अच्छे भाग्य का कारक होता है।

विशेषकर मिथुन और कन्या राशि के लोगों के लिए। वे लोग जो बोलने में हकलाते हैं उनके लिए पन्ना लाभकारी होता है। यदि आप एक वक्ता हैं और पन्ना धारण करते हैं, तो आपकी भाषा और वाणी में निखार आएगा।

विशेष शक्तियां

जीवन में होने वाली कई घटनाएं और दुख में राहत पहुंचाने के लिए पन्ना बहुत ही सहायक होता है। यह अच्छी सेहत व धन संबंधी मामलों के लिए अच्छा होता है और जीवन में खुशियों को बरकरार रखता है। पन्ना में जहरीले तत्वों व विषाणु से लड़ने की भी क्षमता होती है और इसे धारण करने से सर्प दंश की संभावना भी कम हो जाती है।

धारण करने से पूर्व

पन्ना रत्न सदोष अथवा दूषित अवस्था का धारण कर लिया जाए तो धारक व्यक्ति के लिए अनेकों प्रकार की अशुभता एवं बाधायें उत्पन्न कर देता है। पन्ना रत्न चाहे कितने ही बड़े आकार का, मूल्यवान तथा असली ही क्यों न हो यदि सदोष है तो वह धारक के लिए संकट का कारण बन जाता है।

पुखराज

नवग्रहों के नवरत्नों में से बृहस्पति का रत्न 'पुखराज'होता है। इसे 'गुरु रत्न'भी कहा जाता है। बृहस्पति के इस प्रतिनिधि रत्न को हिन्दी में पुखराज, पुष्यराज, पुखराज, संस्कृत में पुष्यराज, अंग्रेजी में टोपाज अथवा यलो सैफायर, फारसी में जर्द याकूत, देवनागरी में पीत स्फेटिक के नाम से पहचाना व जाना जाता है।

पुखराज जातक के जीवन में समृद्धि लाता है। यह एक ऐसा रत्न है जो जातक के भीतर रचनात्मकता शैली को बढ़ाता है और जीवन में सफलता के अनेक अवसर प्रदान करता है। इसके प्रभाव से व्यक्ति को बुद्धि व ज्ञान प्राप्त होता है जिससे उसे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिलती है और व्यक्ति मजबूत बन जाता है।

धारण के लाभ

बृहस्पति का प्रतिनिधि रत्न होने के कारण पुखराज धारण करने से व्यापार तथा व्यवसाय में वृद्धि होती है। यह अध्ययन तथा शिक्षा के क्षेत्र में भी उन्नति का कारक माना गया है। बृहस्पति जीव अर्थात पुत्रकारक ग्रह होने के कारण इसे धारण करने से वंशवृद्धि होती है।

पुत्र अथवा संतान की कामना के इच्छुक दम्पतियों को दोषरहित पीला पुखराज अवश्य ही धारण कर लेना चाहिए। इसे धारण करने से धन-वैभव और ऐश्वर्य की सहज में ही प्राप्ति होती है।

यह रत्न अविवाहित जातकों (विशेषकर कन्याओं को) विवाह सुख, गृहणियों को संतान सुख व पति सुख, दंपत्तियों को वैवाहिक जीवन में सुख एवं व्यापारियों को अत्यधिक लाभ देता है। इसे धारण कर लेने से अनेकानेक प्रकार के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक ओर दैवीय कष्टों से मुक्ति मिल जाती है।

औषधि गुण

पुखराज हड्डी का दर्द, काली खांसी, पीलिया, तिल्ली, एकांतरा ज्वर में धारण करना लाभप्रद है। इसे कुष्ठ रोग व चर्म रोग नाशक माना गया है। इसके अलावा इस रत्न को सुख व संतोष प्रदाता, बल-वीर्य व नेत्र ज्योतिवर्धक माना गया है। आयुर्वेद में इसको जठराग्नि बढ़ाने वाला, विष का प्रभाव नष्ट करने वाला, वीर्य पैदा करने वाला, बवासीर नाशक, बुद्धिवर्धक, वातरोग नाशक, और चेहरे की चमक में वृद्धि करने वाला लिखा गया है। पेट में वायु की शिकायत अथवा पांडुरोग में भी पुखराज धारण करना लाभकारी रहता है।

विशेष शक्तियां

युवतियाँ अपने सतीत्व को बचाने के लिए प्राचीन काल में इसे अपने पास रखती थी क्योंकि इसे पवित्रता का प्रतीक माना जाता है। यह भूत-प्रेत बाधा से भी धारणकर्ता की रक्षा करता है।

धारण करने से पूर्व

दोषयुक्त पुखराज कदापि धारण नहीं करना चाहिए। भले ही इसके बदले में पुखराज का कोई उपरत्न ही धारण कर लें। पुखराज में प्रायः निम्न दोष बताए गए हैं - प्रभाहीन, धारीदार, लाल छीटें, खरोंचकर, सुषम, दूधक, जालक, अनरखी, श्याम बिन्दु, श्वेत बिन्दु, रक्त बिन्दु, गड्ढेदार, छींटेदार, खड़ी रेखा से युक्त, अपारदर्शी तथा रक्ताभ धब्बों से युक्त पुखराज दोषी होता है। इस प्रकार का पुखराज धारण करना अनिष्टकारी रहता है।

हीरा

हीरा रत्न जिसे डायमंड के नाम से भी जाना जाता हैं सभी रत्नों में सबसे महंगा रत्न हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार हीरा रत्न शुक्र ग्रह का रत्न हैं। शुक्र ग्रह और हीरा दोनों का बहुत अधिक महत्त्व है। हीरे को ऐसे सभी व्यक्ति धारण कर सकते हैं। जिनकी जन्म कुंडली में शुक्र लग्नेश, पंचमेश और नवमेश हों। जिन व्यक्तियों की कुंड्ली में शुक्र ग्रह शुभ भावों का स्वामी हों तथा शुभ भावों में स्थित हों ऐसे सभी व्यक्तियों को शुक्र रत्न हीरा पहनने से शुभता की प्राप्ति होती हैं।

हीरा रत्न अपने धारक को शीघ्र फल देने शुरु कर देता है। हीरे के विषय में एक मान्यता प्रसिद्ध हैं कि हीरा पहनने समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वो किसी भी प्रकार से दोषयुक्त न हों। हीरे से जुड़ी ऐसी अनेकों किस्से विश्व भर में प्रसिद्ध हैं जिनके अनुसार निर्दोष और उत्तम क्वालिटी का हीरा होने के बावजूद हीरा अपने धारक के लिए अनिष्ट का कारण बना। ऐसे हीरों को विश्व में अभिशप्त हीरे के नाम से जाना जाता है अर्थात ऐसे हीरे जिस भी व्यक्ति के पास रहें या जिस भी व्यक्ति ने इन्हें धारण किया, उनका सब कुछ बर्बाद हो गया। इसलिए हीरा रत्न को जल्दबाजी में पहनने से बचना चाहिए।

धारण करने से लाभ

हीरा रत्न शुक्र का रत्न हैं। नवग्रहों में शुक्र भौतिक भोग-विलास, धन-संपत्ति, ऐश्वर्य, वाहन और वैवाहिक सुख से संबंधित ग्रह हैं। जीवन में सभी सुख-सुविधाएं शुक्र ग्रह की शुभता से ही प्राप्त होती हैं। सभी रत्नों में हीरा रत्न खूबसूरती और सौंदर्य का प्रतीक रत्न हैं। इसी वजह से यह रत्न सबसे अधिक मूल्यवान रत्नों की श्रेणी में भी आता है। इसे धारण करने से धारक की आकर्षण क्षमता अत्यधिक बढ़ जाती हैं। अमेरिकी डायमंड को पेन्डेन्ट के रुप में भी इसे धारण किया जा सकता हैं। बहुत सुंदर रत्न होने के कारण यह महिलाओं में विशेष रुप से लोकप्रिय हैं। रत्नों का सम्राट भी इस रत्न को कहा जाता हैं। यह माना जाता हैं कि जिस व्यक्ति को यह रत्न शुभ हो जाएं उस व्यक्ति का जीवन राजाओं के समान हो जाता हैं। हीरा रत्न तो एक हैं परन्तु

इससे अनेक तरह की मान्यताएं जुड़ी हुई हैं। कोई इसे वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाने का कार्य करता हैं। कोई इसे विपरीत लिंग में अपना आकर्षण बना बनाए रखने के लिए धारण करता हैं। व्यापार, सौंदर्य, वाहन और इसी प्रकार के अन्य विषयों के लिए हीरा रत्न धारण किया जाता हैं। सर्वगुण संपन्न हीरा रत्नों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता हैं। यह माना जाता है कि पुत्र संतान की कामना रखने वाली स्त्रियों को हीरा रत्न धारण नहीं करना चाहिए।

औषधि गुण

हीरे के बारे में मान्यता है कि इस रत्न को पहनने से आयु बढ़ती हैं। यह विशेष रुप से मधुमेह और नेत्र रोगों से भी राहत देता है। इस रत्न के बारे में ध्यान देने योग्य बात यह हैं कि जिन स्त्रियों को पुत्र संतान की चाह हों, उन स्त्रियों को यह रत्न धारण करने से बचना चाहिए। ऐसा माना जाता हैं कि हीरा रत्न पहनने से पुत्र संतान के संभावनाओं में कमी रहती हैं। चिकित्सा जगत में यह रत्न अतिनिद्रा को रोकता हैं। वात रोगों पर भी यह नियंत्रण रखता है। इसके साथ ही इसे धारण करने पर चर्मरोगों में कमी होती है। जलोदर एवं पाचनशक्ति से जुड़े रोगों से इसके द्वारा बचाव किया जा सकता है। हीरे की भस्म से अन्य अनेक रोगों का इलाज करने में सहायता मिलती हैं।

विशेष शक्तियां

कला, संगीत और अभिनय के क्षेत्रों से जुड़े व्यक्तियों का भी हीरा रत्न धारण करना लाभप्रद रहता हैं। जीव-जंतुओं से भय रखने वाले व्यक्तियों को हीरा रत्न पहनना चाहिए। हीरा रत्न प्रेमी वर्ग को विशेष शुभ रहता हैं। यह रत्न धारण कर प्रेम संबंधों में सफलता प्राप्त की जा सकती है। इसके अतिरिक्त जिन व्यक्तियों को भूत-प्रेम और ऊपरी बाधा का भय रहता हैं उन सभी व्यक्तियों को भी हीरा रत्न धारण करना चाहिए। दोषयुक्त हीरा अपने धारक को कष्ट और नुकसान देता हैं। हीरा रत्न सिर्फ हीरे से ही काटा जा सकता है। अन्य किसी रत्न से इसे काट्ना संभव नहीं हैं। हीरा रत्न में आभा सैदव ऊपर की ओर रहती हैं। अन्य सभी रत्नों में यह नीचे की ओर होती हैं। टूटा हुआ या दोषयुक्त हीरा धारण करने से बचना चाहिए। अन्यथा यह लाभ की जगह हानि का कारण भी

बनता हैं। दांपत्य जीवन में किसी भी तरह की कमी होने पर यह रत्न अवश्य धारण करना चाहिए। यह रत्न वैवाहिक सुख में शुभता लाता है।

नीलम

संस्कृत में नील, इंद्रनील, नीलमणि, शौरी रत्न और तृणग्राही कहे जाने वाले रत्न को हिंदी में नीलम और अंग्रेजी में सेफायर कहते हैं। इसे उर्दू और फारसी में याकूत, कबूद और नीलम नाम से जाना जाता है। मोर पंख वाले रंग के नीलम को बेशकीमती माना जाता है।

सबसे अच्छा नीलम उसे माना जाता है, जिसमें चिकनाई हो और स्पर्श करने में मुलायम लगे। साथ ही, जिसमें से किरणें निकलती दिखाई पड़ें। ऐसा माना जाता है कि उत्तम नीलम के समीप जाते ही तिनका उससे चिपट जाता है। असली नीलम में सीधी धारियां होती हैं। मयूर नीलम कश्मीर के नीलम को कहा जाता है।

धारण करने से लाभ

ऐसी मान्यता है कि यदि नीलम रत्न का धारण सही समंजन के साथ किया जाये तो वह धारक की रक्षा करता है। शनि के प्रभाव से उत्पन्न सभी विक्षेप और उपद्रव शांत एवं निष्क्रिय हो जाते हैं। आर्थिक सन्तुलन, स्वास्थ्य एवं सम्मान की रक्षा तथा वृद्धि में नीलम रत्न सहायता प्रदान करता है।

नीलम रत्न धारक को कोई क्रूर अथवा कठोर कार्य करने में कोई हिचक नहीं होती एवं ऐसा भी कहा जाता है कि नीलम रत्न का धारक संसार में कहीं भी जाये, कहीं पराजित नहीं होता। नीलम के प्रभाव से उसका व्यक्तित्व इतना शोभित एवं प्रभाव युक्त बन जाता है कि वह किसी अन्य व्यक्ति के सम्मुख लज्जित, भयभीत एवं कुंठित नहीं होता।

औषधि गुण

रोगोपचार की दृष्टि में भी नीलम एक परम उपयोगी रत्न माना गया है एवं इसके माध्यम से विभिन्न रोगों का निवारण किया जाता रहा है। श्वास रोग, मूर्छा, ज्वर, पक्षाघात, स्नायु वेदना आदि की स्थिति में नीलम रत्न धारण से

रोगमुक्ति हो जाती है। विक्षिप्तता और उन्माद में नीलम की भस्म चमत्कारी प्रभाव दिखाती है।

रक्त विकार, खाँसी, विषम ज्वर आदि तो सहजता से दूर हो जाते हैं। नाड़ी तंत्र पोषण, रक्त, मस्तिष्क, सुनने में परेशानी होती है और गंजापन। इस रत्न धारण से मानसिक तनाव दूर होता है। यह रत्न अपने धारक को धन, नाम, प्रसिद्धि, मान्यता, शक्ति व धैर्य आता है।

विशेष शक्तियां

एक मान्यता के अनुसार इस रत्न को धारण करने से गर्भधारण क्षमता में बढ़ोतरी होती है। इस रत्न के धारक को धैर्य से कार्य करने की सलाह दी जाती है अन्यथा कष्ट की स्थिति बन सकती है। इस रत्न को पहनने से दृष्टि और श्रवण शक्ति में सुधार होता है।

धारण करने से पूर्व

नीलम धारण करने से पहले इसे कुछ दिन नीले या काले कपड़े में बांधकर अपने पास रखा जाता है। इसे बाजू में भी सात दिन बांधकर देखा जाता है, ताकि प्रभाव का पता चल सके। यदि इन सात दिनों में कोई बुरी घटना न हो और मन में शांति महसूस हो तो नीलम पहना जा सकता है, लेकिन यदि रात में बुरे स्वप्न आएं, मन-मस्तिष्क में भारीपन लगे, लोगों से विवाद हो, चोट लगे या दुर्घटना हो तो नीलम नहीं पहनना चाहिए।

गोमेद

गोमेद को अंग्रेजी में अगेट, हेस्सोनाइट, नेक्स के नाम से जाना जाता है। संस्कृत में गोमेद को गोमेदक, पीत रक्तमणि, पिग स्फटिक कहा गया है। सुलेमानी, हजार यामनी नाम से भी गोमेद को जाना जाता है। गोमेद को बंगाल में मोदित मणि के नाम से पुकारते हैं।

गोमेद राहु ग्रह का मुख्य रत्न है। यह माना जाता है कि राहु जिस भाव और राशि में स्थित होता है उस भाव और राशि के फलों पर स्वयं अधिकार कर लेता है। इस स्थिति में राहु का रत्न गोमेद धारण करना विशेष उपयोगी सिद्ध हो

सकता है, परन्तु यहां यह ध्यान रखना चाहिए कि राहु अशुभ भाव में स्थित ना हों।

धारण करने से लाभ

इस रत्न में राहु की शक्तियां एवं गुण विद्यमान है। गोमेद राहु की नकारात्मक उर्जा को सकारत्मक उर्जा में परिवर्तित करके राहु के कष्टकारी प्रभाव से व्यक्ति को सुरक्षा प्रदान करता है। गोमेद पहनने से राहु का अशुभ प्रभाव दूर होता है और राहु ग्रह को बल प्राप्त होता है। इसके अलावा कालसर्प दोष के कष्टों से भी बचाव होता है।

राहु यदि केन्द्र (1, 4, 7 या 10वें) या त्रिकोण (1, 5 या 9वें) भाव में हों तो राहु स्थिति ग्रह का रत्न धारण करने के स्थान पर राहु रत्न गोमेद धारण करने की सलाह दी जाती है। व्यक्ति को मान-सम्मान एवं धन आदि प्राप्त होता है। गोमेद में इतनी सारी खूबियां हैं जिनसे व्यक्ति के जीवन की बहुत सी मुश्किलें दूर हो सकती हैं।

गोमेद उन लोगों के लिए लाभकारी होता है जो राजनीति, जन संपर्क, दलाली से जुड़े व्यवसाय और प्रबंधन से संबंधित कार्य करते हैं क्योंकि गोमेद के प्रभाव से शक्ति, सफलता और धन की प्राप्ति होती है। यदि जन्म कुंडली में राहु की महादशा और अंतर्दशा के समय कोई व्यक्ति गोमेद रत्न पहनता है तो राहु ग्रह के बुरे प्रभावों से उसकी रक्षा होती है। गोमेद के प्रभाव से विरोधियों पर विजय मिलती है।

मन में आने वाले निराशावादी विचार भी दूर होते हैं। गोमेद रत्न को धारण करने से भ्रम दूर होते हैं, वैचारिक पारदर्शिता आती है और राहु की दशा अवधि में सुख प्राप्त होता है।

औषधि गुण

जिन लोगों का स्वास्थ्य अक्सर खराब रहता है और उनकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित हो, उन सभी को गोमेद अवश्य धारण करना चाहिए। इससे रोगों की पहचान शीघ्र होती है तथा स्वास्थ्य सुधार में लाभ मिलता है।

पाचन सम्बन्धी रोग, त्वचा रोग, क्षय रोग तथा कफ-पित्त को भी यह संतुलित रखता है।

राहु तीव्र फल देने वाला ग्रह है। आयुर्वेद के अनुसार गोमेद के भस्म का सेवन करने से बल एवं बुद्धि बढ़ती है। पेट की खराबी में गोमेद का भस्म काफी फायदेमंद होता है। वे लोग जो पेट संबंधी विकार, सुस्त उपापचय से परेशान हैं उनके लिए गोमेद धारण करना फायदेमंद होता है क्योंकि यह स्वास्थ्य और शक्ति को भी दर्शाता है।

विशेष शक्तियां

गोमेद धारण करने से भय की भावना दूर होती है और किसी भी कार्य को करने के लिए आत्म विश्वास, प्रेरणा व शक्ति मिलती है। गोमेद एक ऐसा रत्न है जो नजर की बाधाओं, भूत-प्रेत एवं जादू-टोने से भी सुरक्षा प्रदान करता है।

लहसुनिया

समस्त नवग्रहों की श्रेणी में अन्तिम ग्रह केतु वास्तव में राहु का शरीर है। लहसुनिया को संस्कृत भाषा में वैदूर्य, वायजा, विदुरज अथवा बिड़ालाक्ष से भी सम्बोधित करते हैं। बंगला भाषा में वैदूर्य रत्न को सूत्रमणि से सम्बोधित किया जाता है।

गुजराती भाषा में लसणियों, बर्मी में चानों के नाम से ज्ञात है एवं अरबी भाषा में अनलहिर के नाम से सम्बोधित किया जाता है। अंग्रेजी में इसके लिए कोई मौलिक शब्द नहीं मिलता परन्तु इसकी संरचना के आधारानुसार इसे कैटआई कहा जाता है, जिसका तात्पर्य है बिल्ली की आँख।

धारण करने से लाभ

केतु ग्रह की शुभता प्राप्त करने के लिए लहसुनिया रत्न धारण किया जाता है। वस्तुतः यह केतु का प्रतिनिधि रत्न लहसुनिया है। लहसुनिया उन जातकों के लिए बेहद उत्तम होता है जो शेयर बाजार या जोखिम भरे निवेश कार्य करते हैं। इस रत्न के प्रभाव से जोखिम भरे निवेशों का कार्य कर रहे व्यक्ति का भाग्य

चमकता है। व्यावसायिक क्षेत्र में यदि तरक्की लंबे समय से रुकी हुई है, तब भी यह रत्न काफी लाभकारी साबित होता है।

इसके प्रभाव से व्यवसायिक क्षेत्र में सफलता हेतु भी इस रत्न को धारण किया जाता है। फंसा हुआ पैसा व खोई हुई आर्थिक संपदा को भी वापस लाने में लहसुनिया लाभदायी होता है। यह रत्न दिमागी परेशानियां, शारीरिक दुर्बलता, दुख, दरिद्रता, भूत आदि से छुटकारा दिलाता है। लहसुनिया यदि अनुकूल हो तो यह धन-दौलत में तीव्र गति से वृद्धि करता है। आकस्मिक दुर्घटना, गुप्त शत्रु से भी रक्षा करता है।

औषधि गुण

जिन व्यक्तियों की कुंडली में केतु लग्न भाव में स्थित हों उन व्यक्तियों को स्वास्थ्य सुख प्राप्ति के लिए लहसुनिया रत्न धारण करना चाहिए। लहसुनिया के प्रभाव से शारीरिक कष्ट भी दूर होते हैं। अवसाद, लकवा व कैंसर जैसी बीमारियों में भी यह रत्न लाभदायक होता है।

लहसुनिया मन को शांति प्रदान करता है और इसके प्रभाव से स्मरण शक्ति तेज होती है और धारक तनाव से दूर रहता है। इसे धारण करने से रात्रि में भयानक स्वप्न नहीं आते है। लहसुनिया रत्न को लाकेट के रुप में पहनने से दमें से तथा श्वास नली की सूजन से आराम मिलता है। यह रत्न बढ़ती ठंड के कारण शरीर में होने वाली बीमारियों को भी कम करता है।

विशेष शक्तियां

इस रत्न को धारण करने से बुरी नजर के प्रभाव से भी बचे रहते हैं। लहसुनिया रत्न चुनौती भरी स्थिति में भी सुख-सुविधाओं का आनंद प्राप्त करवाता है। अध्यात्म की राह पर चलने वालों के लिए भी लहसुनिया रत्न लाभकारी होता है। इसको धारण करने से सांसारिक मोह छूटता है और व्यक्ति अध्यात्म व धर्म की राह पर चलने लग जाता है।

रत्न चयन विधियां

विभिन्न विधियों द्वारा रत्नों का चयन किसी व्यक्ति विशेष के लिए किसी कुंडली को पढ़कर उसका भविष्य कथन करना जितना महत्वपूर्ण व अहम कार्य है उतना ही महत्वपूर्ण उस व्यक्ति विशेष के लिए रत्न का चुनाव करके बताना भी है।

इसमें विभिन्न ज्योतिषियों द्वारा रत्न निर्धारण के लिए भिन्न-भिन्न पद्धतियां अपनाई जाती है, परंतु सभी का लक्ष्य एक ही होता है धारक की समस्या को दूर करना और धारक को वांछित लाभ पहुंचाना। यही कारण है कि रत्नों का चुनाव करने के लिए कई विधियां प्रचलित है. ऐसी ही कुछ पद्धतियों की जानकारी यहां दी जा रही हैं -

जन्मवार के अनुसार रत्न चयन

सात ग्रहों के अनुसार सात वारों का चलन हुआ है। सूर्य, चंद्र, मंगल आदि ग्रहों के अनुरुप सात दिनों का नामकरण हुआ है। इन ग्रहों से संबंधित रत्नों का श्रीगणेशः भी इसी क्रम में प्रारम्भ हुआ। सात ग्रह उनसे संबंधित सात वार तथा उनके ग्रह निम्न सारणी से स्पष्ट हो जायेंगे। आपको यदि अपने जन्म का वार ज्ञात है तो आप उससे संबंधित रत्न धारण करके लाभ ले सकते हैं।

दिन	ग्रह	वार
रविवार	सूर्य	माणिक्य
सोमवार	चंद्र	मोती
मंगलवार	मंगल	मूंगा
बुधवार	बुध	पन्ना
गुरुवार	गुरु	पुखराज
शुक्रवार	शुक्र	हीरा
शनिवार	शनि	नीलम

चंद्र राशि (जन्मराशि) राशिस्वामी रत्न

जिस अंक में चंद्रमा स्थित होता है, वह चंद्र राशि कहलाती है। राशि का नाम प्रत्येक अंक के सामने नीचे दी गई सारणी से स्पष्ट हो जाएगा (नामाक्षर से राशि रत्न के अंतर्गत तालिका का प्रयोग करें)। सूर्य तथा चंद्र को छोड़कर प्रत्येक राशि दो-दो ग्रहों का प्रतिनिधित्व करती है। प्रत्येक चंद्र राशि का अपना एक भाग्यशाली रत्न हैं जो आप अपनी चंद्रराशि ज्ञात कर आगे की सारिणी से ज्ञात कर सकते हैं।

राशि	दिन	रत्न	राशि	दिन	रत्न
मेष	मंगल	मूंगा	तुला	शुक्र	हीरा
वृष	शुक्र	हीरा	वृश्चिक	मंगल	मूंगा
मिथुन	बुध	पन्ना	धनु	गुरु	पुखराज
कर्क	चंद्र	मोती	मकर	शनि	नीलम
सिंह	सूर्य	माणिक्य	कुम्भ	शनि	नीलम
कन्या	बुध	पन्ना	मीन	गुरु	पुखराज

नाम अक्षर से राशि रत्न

कुंडली में जिस राशि में चंद्रमा स्थित होता है, वह चंद्र राशि कहलाती है। उदाहरण के लिए निम्न तालिका में माना आपकी जन्म लग्न में जहां चंद्रमा स्थित है, वहां अंक 6 लिखा हुआ है। यह अंक ही आपका राशि अंश है। इसके सामने कन्या राशि लिखा और रत्न के नीचे पन्ना लिखा है। इस प्रकार आपको स्पष्ट हो जाएगा कि आपकी राशि कन्या है और आपका भाग्यशाली रत्न पन्ना है।

जिन व्यक्तियों को अपनी लग्न का पता न हो वह अपने नाम के प्रथम अंक से भी अपनी नामराशि जान सकते हैं। जन्म के समय निकाला गया नाम चंद्र राशि ही इंगित करता है परन्तु अधिकांश नाम बाद में बदल दिए जाते हैं। इससे उनकी जन्मराशि और चलित नामराशि में अंतर आ सकता है। भारतीय पद्ध तियों में इन दोनों राशियों के रत्न/उपरत्न समान ही माने गए हैं।

अंक	नाम का अक्षर	राशि	रत्न
1	चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ	मेष	मूंगा
2	ई, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो	वृष	हीरा
3	क, की, कु, घ, ड, छ, के, को, ह	मिथुन	पन्ना
4	हि, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो	कर्क	मोती
5	मा, मी, मू, में, मो, टा, टी, टू, टे	सिंह	माणिक्य
6	टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो	कन्या	पन्ना
7	रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते	तुला	हीरा
8	तो, ना, नी, नू, नेनो, या, यी, यू	वृश्चिक	मूंगा
9	ये, यो, भा, भी, भू, धा, फ, ढ, भे	धनु	पुखराज
10	भो, ज, जा, जी, जे, जो, खा, खी, खु, खे, खो, गा, गी	मकर	नीलम
11	गु, गे, गो, सा, सी, सु, से, सो, दा	कुम्भ	नीलम
12	दी, दू, थ, झ, दे, दो, चा, चि	मीन	पुखराज

भारतीय जन्म मास के अनुसार रत्न चयन

यदि आपको हिन्दी तिथि व मास का ज्ञान है तब निम्न सारिणी के अनुसार आप अपना भाग्यशाली रत्न/उपरत्न चुन सकते हैं। भारतीय मास के आगे जो रत्न/उपरत्न वर्णित है वही आपका भाग्यशाली रत्न है।

अंक	मास	रत्न/उपरत्न	रत्न
1.	चैत्र (चैत्र)	सिंदूरिया मंगल	मूंगा
2.	वैशाख (बैशाख)	हीरा	हीरा
3.	ज्येष्ठ (जेठ)	पन्ना	पन्ना
4.	आषाढ़ (असाढ़)	मूंगा	मोती
5.	श्रावण (सावन)	माणिक्य	माणिक्य
6.	भाद्रपद (भादों)	जबरजद	पन्ना

7.	आश्विन (क्वार)	नीलम	हीरा
8.	कार्तिक(कातिक)	ओपल	मूंगा
9.	मार्गशीर्ष (अगहन)	पुखराज	पुखराज
10.	पौ(पूस)	फिरोजा	नीलम
11.	माघ (तामड़ा)	सूर्य उपरत्न	नीलम
12.	फाल्गुन (फागुन)	कटैला	पुखराज
13.	पुरुषोत्तम (मलमास/अधिकमास)	नवरत्न	-

सूर्य राशि के आधार पर रत्न चयन

पश्चिमी देशो में लोग जन्म तारीख के आधार पर रत्न धारण करते है, आजकल भारतीय लोग भी जन्म तारीख के अनुसार रत्न धारण करते है, ऐसे स्टोन को 'बर्थ स्टोन' कहा जाता है। जिसके पास जन्म कुंडली नहीं है तथा जन्म की तारीख याद है पर जन्म समय याद नहीं है।

जन्म तारीख	सूर्य राशि	उपयुक्त रत्न
15 अप्रैल से - 14 मई तक	मेष	मूंगा
15 मई से - 14 जून तक	वृष	हीरा
15 जून से - 14 जुलाई तक	मिथुन	पन्ना
15 जुलाई से - 14 अगस्त तक	कर्क	मोती
15 अगस्त से - 14 सितम्बर तक	सिंह	माणिक्य
15 सितम्बर से - 14 अक्टूबर तक	कन्या	पन्ना
15 अक्टूबर से - 14 नवम्बर तक	तुला	हीरा
15 नवम्बर से - 14 दिशम्बर तक	वृश्चिक	मूंगा
15 दिसम्बर से - 14 जनवरी तक	धनु	पुखराज
15 जनवरी से - 14 फरवरी तक	मकर	नीलम
15 फरवरी से - 14 मार्च तक	कुम्भ	नीलम
15 मार्च से - 14 अप्रैल तक	मीन	पुखराज

या जन्म की तारीख पूरी तरह से याद नहीं है तो आप अपनी जन्म माह के अनुसार रत्न धारण कर सकते है, पीछे दी गई सारणी के अनुसार आप अपने रत्न का चयन कर सकते हैं।

आयु के अनुसार रत्न चयन

यदि आपको अपने जन्म तिथि, माह और जन्म समय की जानकारी नहीं है और आप सिर्फ यह जानते है कि आप कितने वर्ष के हैं तो इस विधि द्वारा चुने गए भाग्यशाली रत्न को धारण करके आप स्वास्थ्य, मान, प्रतिष्ठा और धन को प्राप्त कर सकते हैं।

पाश्चात्य जगत में आयु के अनुसार रत्न चयन हेतु निम्न तालिका देखें :

आयु (वर्ष में)	जीवन स्थिति	ग्रह	रत्न
1-4	बचपन, अस्थिरता	चंद्र	मोती
4-12	शिक्षा आरंभ	बुध	पन्ना
12-22	प्रेम, जीत की इच्छा	शुक्र	हीरा
22-41	महत्वाकांक्षा और करियर की शुरुआत	सूर्य	माणिक्य
41-56	एकाग्रता	मंगल	मूंगा
56-68	परिपक्वता	गुरु	पुखराज
68-98	चिंतन, मनन, ध्यान	शनि	नीलम

उपयोगिता अनुसार रत्न चयन

बच्चों को नजर दोष से बचाने के लि	:	टाइगर आई
पिता पुत्र संबंध को बेहतर बनाने के लिए	:	लाजवर्त
प्रेम में सफलता के लिए	:	हीरा
किडनी रोग में लाभदायक	:	किडनी स्टोन
संघर्ष की स्थिति में लाभदायक	:	कटैहला
शीघ्र विवाह हेतु	:	सुनहला
सरकारी पद हेतु	:	माणिक्य
मानसिक शांति हेतु	:	मोती

ग्रह दशा और रत्न चयन

प्रत्येक मनुष्य की जन्मपत्री में ग्रहों की स्थिति उनकी भ्रमण गति के कारण भिन्न भिन्न होती है परन्तु ग्रह जन्मकुंडली के बारह भावों में कहीं न कहीं स्थिति होते हैं। मनुश्य्य के जन्म के समय से ही ग्रहों की महादशा एक निश्चित क्रम में प्रारंभ हो जाती है। जिसका संपूर्ण दशा काल 120 वर्ष का होता है। अतः साधारण शब्दों में इसे इस प्रकार समझा जा सकता है कि इस निश्चित दशा क्रम में जहां भी मनुष्य का जन्म होता है वहीं से क्रमवार यह महादशा उसके जीवन काल में निरंतर चलती रहती है।

जिसका प्रभाव उसके जीवन पर उस्की जन्मकुंडली में ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है। ज्योतिष का एक विशेष नियम है कि जब तक किसी ग्रह की दशा-महादशा नहीं आती तब तक वह फल नहीं देता।

दशाओं का ज्योतिष में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। फलादेश के लिए दशाओं को ही आधार बनाया जाता है। किसी समय विशेष पर व्यक्ति की जन्मकुंडली में जिस ग्रह की महादशा चल रही हो उसका रत्न धार्ण करने से ही उसे लाभ मिलेगा। ग्रह महादशा क्रम और अवधि इस प्रकार है :

ग्रह	महादशा अवधि	रत्न	ग्रह	महादशा अवधि	रत्न
केतू	7 साल	लहसुनिया	राहु	18 साल	गोमेद
शुक्र	20 साल	हीरा	गुरु	16 साल	पुखराज
सूर्य	6 साल	माणिक्य	शनि	19 साल	नीलम
चंद्र	10 साल	मोती	बुध	17 साल	पन्ना
मंगल	7 साल	मूंगा	-	-	-

अन्यथा नहीं, क्योंकि किसी भी कुंडली में ग्रह कितने भी अनुकूल स्थिति में हो उनका रत्न धारण करने से तब तक लाभ की अपेक्षा करना निरर्थक है जब तक कि उस संबंधित ग्रह की महादशा का समय न चल रहा हो, अतः दशाओं अनुसार ही रत्न धारण करना भी सार्थक सिद्ध हो सकता है।

लग्न अनुसार रत्न चयन विचार

व्यक्ति के जन्म लग्न के आधार पर भाग्यशाली रत्न का चयन करना एक सरलतम विधि हैं जो प्रायः प्रयोग की जाती है। ज्योतिष शास्त्र में जन्मकुंडली में लग्न का स्थान विशेष महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्ति के तन, आचार-विचार, स्वास्थ्य, व्यक्तित्व आदि का कारक है। लग्न कुंडली में मूल त्रिकोण को सर्वाधिक प्रभावशाली माना गया है दूसरा स्थान हैं केन्द का। त्रिक भाव कुंडली के सबसे अशुभ भाव हैं। मेषादि बारह लग्नों में अलग-अलग रत्न चयन या धारण करने का महत्व है। दशा-अंतर्दशा अथवा गोचर में कुछ समय के लिए रत्न धारण कर सकते हैं, लेकिन मुख्यतया लग्नेश, पंचमेंश एवं भाग्येश के रत्न धारण करने से जीवन में आने वाली बाधाओं से मुक्ति मिल सकती है।

मेष लग्न

मेष लग्न के लिए माणिक्य, मोती, मूंगा, पुखराज धारण करना शुभ रहेगा। इन व्यक्तियों के लिये मंगल लग्नेश और अष्टमेष होते है। इस लग्न के लिये लग्नेश होने के कारण मंगल शुभ है। अतः मेष लग्न के व्यक्तियों का मूंगा रत्न धारण करना शुभ है। इसे धारण करने से इन्हें, स्वास्थ्य, मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। व्यक्तित्व प्रभावशाली बनाने एवं स्वास्थ्य संबंधी अनुकूलता हेतु मेष लग्न वालों को मूंगा धारण करना चाहिए। उत्साहवर्धन व सक्रियता हेतु भी मूंगा उपयोगी है।

- मेष लग्न के लिये सूर्य पंचम भाव यानि त्रिकोण भाव का स्वामी है और साथ ही ये लग्नेश मंगल के मित्र भी होते है अतः मेष लग्न के व्यक्तियों के लिये माणिक्य रत्न धारण करना विद्या क्षेत्र की बाधाओं को दूर करने में सहयोग करेगा।
- इसके रत्न के प्रभाव से मेष लग्न के व्यक्ति को बुद्धि कार्यो में रुचि बढ़ती है। यह रत्न इन्हें आत्मोन्नति के लिये, संतान प्राप्ति के लिये, प्रसिद्धि, राज्यकृपा प्राप्ति के लिये सदैव धारण करना चाहिए। साथ ही शिक्षा में सफलता और संतान सुख के लिए माणिक्य धारण करना शुभ है।

- मानसिक परेशानियों से मुक्ति एवं सुख के लिए चतुर्थेश चंद्रमा का रत्न मोती उपयुक्त रहेगा।
- इस लग्न के लिए गुरु नवमेंश यानी 9वें भाव व 12वें भाव के स्वामी होते है। ऐसे में वे इस लग्न के लिये शुभ ग्रह हो जाते है। अतः मेष लग्न के व्यक्तियों को पुखराज रत्न सदैव धारण करके रखना चाहिए।
- इस रत्न को धारण करने से व्यक्ति का बुद्धिबल, योग्यता, ज्ञान, धन और उन्नती बढती है। उच्चस्तरीय सफलता एवं भाग्य वृद्धि हेतु भाग्येश गुरु का रत्न पुखराज पहनना श्रेयस्कर रहेगा।
- इस लग्न में शुक्र दूसरे व सप्तम भाव के स्वामी है। कुंडली की इन दोनों को मारक भाव कहा गया है। इसलिये मेष लग्न के व्यक्तियों को जहां तक हो सके हीरा धारण करने से बचना चाहिए। जरूरी होने पर केवल शुक्र महादशा में ही इसे धारण करना चाहिए।
- इस लग्न के लिये शनि दशम व एकादश भाव के स्वामी है। आजीविका कार्यो और आय वृद्धि के लिये इस रत्न को धारण किया जा सकता है। साथ ही इसे शनि की महादशा में धारण करना चाहिए।
- सामान्यतः मेष लग्न वालों को पन्ना, हीरा एवं नीलम पहनने से बचना चाहिए अर्थात इन रत्नों को आजीवन धारण नहीं करें। दशा-अंतर्दशा अथवा गोचर के अनुसार धारण कर सकते हैं।

वृषभ लग्न

वृष लग्न वालों का लग्नेश एवं षष्ठेश शुक्र का रत्न हीरा पहनने से व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा व स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। इस लग्न के व्यक्तियों को हीरा सदैव धारण करके रखना चाहिए। यह रत्न व्यक्ति को आयु वृद्धि, सर्वांगीण विकास व आर्थिक प्रगति देता है।

- वृषभ लग्न के लिये सूर्य चतुर्थ भाव के स्वामी है परन्तु यहां सूर्य लग्नेश शुक्र के मित्र न होकर, शत्रु है। वृषभ लग्न के व्यक्ति को माणिक्य रत्न केवल सूर्य महादशा में धारण करना चाहिए।

वृषभ लग्न के लिये सूर्य रत्न माणिक्य महादशा अवधि में सुख-शान्ति,

मातृसुख और भूमि सुख में वृद्धि करता है। भूमि से जुड़े विवाद, पारिवारिक कष्ट आदि प्रतिकूल परिस्थितियों में जातक को माणिक्य धारण करना चाहिए।

- वृषभ लग्न के लिये बुध दूसरे और पंचम भाव के स्वामी है। साथ ही लग्नेश शुक्र के मित्र भी है। अतः दोनों प्रकार से शुभ है। इसलिये वृषभ लग्न के व्यक्ति पन्ना धारण कर लाभ प्राप्त कर सकते है। इसे धारण करने से व्यक्ति को बुद्धिबल, यश, भाग्योदय देता है। आर्थिक मामलों, विद्या, संतान, मानसिक एकाग्रता के लिए पन्ना पहनना चाहिए।
- इस लग्न के लिये शनि लग्नेश शुक्र के मित्र है। व शनि कि स्थिति यहां पर नवमेंश व दशमेंश की होती है। इस लग्न के लिये शनि सबसे अधिक शुभ फल देने वाले ग्रह है।

  शनि इनके लिए प्रबल योगकारक हो जाता है। अतः शनि का रत्न नीलम पहने से भाग्य की प्रबलता, राज्य की अनुकंपा बनी रहेगी तथा जीवन में उच्च स्तरीय सफलता मिलेगी। इस लग्न के व्यक्तियों को नीलम रत्न, हीरे के साथ धारण करना चाहिए।
- वृषभ लग्न के लिये चन्द्र तीसरे भाव के स्वामी है। इस लग्न के व्यक्तियों को यह रत्न कदापि नहीं पहना चाहिए।
- वृषभ लग्न में मंगल 7वे ओर 12 वें भाव के स्वामी है। जो शुभ नहीं है। इस स्थिति में इस लग्न के व्यक्तियों को मंगल रत्न मूंगा नहीं धारण करना चाहिए। विशेष स्थिति में इसे मंगल महादशा में धारण किया जा सकता है।
- वृषभ लग्न में गुरु अष्टम व एकादश भाव के स्वामी है। इस लग्न के व्यक्तियों को पुखराज केवल गुरु की महादशा में ही धारण करना चाहिए।

मिथुन लग्न

मिथुन लग्न के जातकों को लग्नेश बुध का रत्न पन्ना धारण करना श्रेयष्कर है बुध लग्नेश व चतुर्थेश भी है अतः पारिवारिक एवं स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं, वाहन-भूमि आदि की प्राप्ति के लिए पन्ना धारण करना शुभ रहेगा। इस लग्न के व्यक्ति इसे निसंकोच धारण कर सकते है।

- मिथुन लग्न में शुक्र व्ययेश व पंचमेंश होते है। इस लग्न के व्यक्ति हीरा सदैव धारण करें। संतान सुख एवं विद्या में सफलता के लिए शुक्र का रत्न हीरा पहनना शुभ रहेगा।
- मिथुन लग्न कि कुंडली में शनि अष्टम भाव व नवम स्थान का स्वामी बनता है। शनि मिथुन लग्न के लिये शुभ होने के कारण, इस लग्न का व्यक्ति अगर नीलम धारण करें तो उसके लाभदायक रहता है। इसके साथ ही ऐसे व्यक्तियों को लग्नेश बुध आ रत्न पन्ना व नीलम दोनों एक साथ धारण करने चाहिए।
- इस लग्न के लिये गुरु सप्तम व दशम भाव के स्वामी है। इस लग्न के व्यक्ति इस रत्न को धारण कर सकते है। इस रत्न को धारण् करने पर मिथुन लग्न के व्यक्तियों को सुख-समृद्धि देगा।
- मिथुन लग्न के व्यक्तियों के लिये चन्द्र दूसरे भाव यानि धन भाव के स्वामी है। इस लग्न के व्यक्तियों को यह रत्न केवल चन्द्र महादशा ६ अन्तर्दशा में ही धारण करना चाहिए। दूसरे भाव को मारक भी कहा जाता है। इसलिये जहां तक संभव हो इस लग्न के व्यक्तियों को यह रत्न धारण करने से बचना चाहिए।
- इस लग्न के लिये सूर्य तीसरे घर के स्वामी है। इसलिये माणिक्य रत्न धारण करना मिथुन लग्न के व्यक्तियों के लिये कभी भी लाभकारी नहीं रहेगा।
- इस लग्न के लिये मंगल की स्थिति 6वें व 11वें भाव के स्वामी के रुप में होती है। इस लग्न के व्यक्ति इस रत्न को केवल मंगल महादशा में ही धारण करे, तो इससे मिलने वाले फल व्यक्ति के लिये शुभ रहते है।

कर्क लग्न

कर्क लग्न वालों को लग्नेश चंद्रमा का रत्न मोती आजीवन धारण करना चाहिए। आपके लिए यह रत्न सर्वथा शुभ रहेगा। आपको मोती धारण करने से स्वास्थय सुख की प्राप्ति होगी। आयु बढेगी।

- कर्क लग्न के जातकों को मूंगा भी पहनना चाहिए क्योंकि मंगल पंचम व दशम भाव का स्वामी होकर प्रबल योगकारक ग्रह बन जाता है। मूंगा पहनने से शिक्षा, संतान, राज्य आदि से अनुकूलता प्राप्त होती है।

- कर्क लग्न वालों को हीरा, नीलम या पन्ना नहीं पहनना चाहिए। पुखराज कुछ समय के लिए पहना जा सकता है। साथ ही इन व्यक्तियों को इस रत्न को धारण करने से बुद्धिबल, कैरियर की बाधाओं में कमी और शिक्षा का सहयोग आजीविका क्षेत्र में प्राप्त होता है।
- कर्क लग्न के लिये गुरु छठे भाव व नवम भाव के स्वामी होते है। नवमेंश होने के कारण इस लग्न के लिए विशेष शुभफलकारी हो जाते है। साथ ही ये लग्नेश चन्द्र के मित्र भी है। इन व्यक्तियों को यह रत्न सदैव धारण करके रखना चाहिए।
- इस लग्न के शुक्र चतुर्थेश व एकादशेश शुक्र होते है। यहां पर ये लग्नेश चन्द्र के मित्र भी नहीं है। इसलिये केवल शुक्र महादशा अवधि में ही इसे धारण करना चाहिए।
- कर्क लग्न की कुंडली में शनि सप्तम और अष्टम स्थान के स्वामी होते है। अतः कर्क लग्न के व्यक्ति को नीलम धारण नहीं करना चाहिए।
- कर्क लग्न में बुध तीसरे व द्वादश भाव का स्वामी है। इस लग्न के व्यक्तियों का पन्ना रत्न को धारण करना शुभ नहीं है।
- इस लग्न के व्यक्तिओं के लिए सूर्य दूसरे भाव यानि धन भाव का स्वामी है। साथ ही इस लग्न के लिये यह लग्नेश चन्द्र का मित्र भी है। अतः धन संचय करने के लिये माणिक्य रत्न धारण किया जा सकता है। परन्तु दूसरा भाव मारक भाव भी है। अर्थात कुछ शारीरिक कष्ट बढ सकते है। माणिक्य पहनने से आर्थिक सफलता तो मिलेगी लेकिन वृद्ध व्यक्तियों को माणिक्य नहीं पहनना चाहिए क्योंकि सूर्य मारकेश भी है।

सिंह लग्न

सिंह लग्न का स्वामी सूर्य स्वयं है। इस लग्न के व्यक्तियों को आजीवन रत्न धारण करना चाहिए। इससे शत्रु को परास्त करने में सफलता मिलेगी,शारीरिक व मानसिक स्वास्थय की वृद्धि होगी, आयु में वृद्धि होगी व यह रत्न मानसिक संतुलन बनाये रखने में भी सहायता करेगा। लग्नेश का रत्न पहनने से आरोग्य और आत्मबल में वृद्धि होती है एवं सफलता मिलती है।

- सिंह लग्न में मंगल चतुर्थ व नवम भाव के स्वामी है। लग्नेश सूर्य के मित्र भी है। इस कारण से सिंह लग्न के व्यक्तियों को मूंगा रत्न अवश्य धारण करना चाहिए। इसे धारण करने से व्यक्ति के भाग्य में वृद्धि होती है। और जीवन में सुख-संपति , पारिवारिक मामलों एवं भाग्य में सफलता मिलेगी।
- सिंह लग्न में चन्द्र बारहवें भाव के स्वामी है। इसलिये इस लग्न के व्यक्तियों के लिये मोती धारण करना अनुकुल नहीं है।
- इस लग्न के व्यक्तियों को लिये बुध दूसरे व एकादश भाव के स्वामी है परन्तु लग्नेश के मित्र नहीं है। ऐसे में इस रत्न को केवल महादशा अवधि में ही धारण करना चाहिए।
- सिंह लग्न में गुरु पंचम और अष्टम भाव के स्वामी होकर मध्यम स्तर के शुभ है। पंचम भाव त्रिकोण भाव है, इस स्थिति में इस ग्रह का रत्न पुखराज सिंह लग्न के व्यक्ति धारण कर शुभ फल प्राप्त कर सकते है। पुखराज पहनने से संतान सुख और प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता प्राप्त होगी।
- सिंह लग्न के लिये शुक्र तीसरे व दशम भाव के स्वामी है। इसलिये सिंह लग्न वालों को हीरा धारण नहीं करना चाहिए। फिर भी बेहद जरूरी होने पर इसे केवल शुक्र महादशा में धारण करना चाहिए।
- सिंह लग्न की कुण्डली में शनि छठे व सांतवें भाव के स्वामी होते हे। इस लग्न के व्यक्तियों को नीलम धारण करने से बचना चाहिए। अगर विशेष परिस्थितियों में इसे धारण करना ही पडे तो केवल शनि महादशा में इसे धारण करना चाहिए।

कन्या लग्न

इस लग्न के लिये बुध लग्नेश और दशमेंश है। कुंडली के ये दोनों ही भाव शुभ है। इसलिये इस लग्न के व्यक्तियों का पन्ना रत्न धारण करना शुभ रहेगा। इसे धारण करने से व्यक्ति को कैरियर और स्वास्थय दोनों सुख प्राप्त होगें। लग्नेश बुध का रत्न पन्ना पहनने से आरोग्य राज्य पक्ष से प्रतिष्ठा और व्यापारिक कार्यों में सफलता मिलती है।

- कन्या लग्न में धनेश व भाग्येश शुक्र है। इस लग्ने के लिये शुक्र सबसे अधिक शुभ फल देने वाले ग्रह है इसलिये इस लग्न के व्यक्तियों को लिये

शुक्र रत्न हीरा सदैव धारण करना चाहिए। हीरा पहनने से पैतृक धन-संपत्ति और भाग्य की अनुकूलता प्राप्त होती है।

- कन्या लग्न के लिये शनि पंचम व छठे भाव का स्वामी बनता है। कन्या लग्न के व्यक्तियों का नीलम रत्न धारण करना शुभ रहेगा।
- इस लग्न के लिये गुरु चतुर्थ व सप्तम भाव के स्वामी होते है। सप्तम भाव मारकेश स्थान भी है फिर भी इस लग्न के लिये गुरु सामान्य से अधिक शुभ फल देता है इसलिये इस लग्न के व्यक्ति इस रत्न को धारण कर सकते है।
- कन्या लग्न के व्यक्तियों को माणिक्य रत्न कभी भी धारण नहीं करना चाहिए। इस लग्न के लिये सूर्य 12 वें भाव के स्वामी होते है।
- कन्या लग्न के लिये मंगल तीसरे व आंठवे भाव के स्वामी है। ये दोनों भाव अशुभ है। इसलिये कन्या लग्न के व्यक्तियों को मूंगा कभी भी धारण नहीं करना चाहिए।
- इस लग्न में कर्क राशि एकादश भाव की राशि बनती है। कर्क राशि स्वामी चन्द्र का रत्न मोती कन्या लग्न के व्यक्तियों को केवल चन्द्र महादशा और अन्तर्दशा में ही धारण करना चाहिए क्योंकि चन्द्र और लग्नेश बुध दोनों सम संबन्ध रखते है। मोती पहनने से आय में वृद्धि होगी।

तुला लग्न

तुला लग्न के लिए शुक्र लग्नेश तथा अष्टमेंश बनते है। तुला लग्न के व्यक्तियों के लिये हीरा स्वास्थय कवच का काम करेगा। इसलिये इस लग्न के व्यक्ति हीरा अवश्य धारण करें। लग्नेश शुक्र का रत्न हीरा आजीवन पहनना चाहिए।

- तुला लग्न के सूर्य आय भाव के स्वामी होते है। लग्नेश शुक्र के शत्रु भी। इस कारण से इसे केवल सूर्य महादशा में धारण करना अनुकुल रहता है।
- तुला लग्न के व्यक्तियों के लिये मंगल दूसरे और सांतवें भाव के स्वामी है। दोनों ही भाव मारक भाव है। जहां तक हो सके इस लग्न के व्यक्तियों को इस रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। मंगल महादशा में व्यक्ति को यह रत्न आर्थिक स्थिति और वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाये रखने में

सहयोग करेगा। साथ ही शारीरिक कष्ट बढा देगा।

- तुला लग्न के व्यक्तियों को मोती रत्न धारण करने से यश, मान-धर्म, पितृसुख और धर्म कार्यो में रुचि देता है। मोती पहनने से राज्य पक्ष से लाभ एवं ख्याति मिलती है।
- तुला लग्न के व्यक्तियों के लिये बुध नवम यानि भाग्य भाव और द्वादश यानि व्यय भाव के स्वामी है। बुध यहां भाग्येश होने के कारण अत्यधिक शुभ हो जाते है।
- तुला लग्न में गुरु तीसरे व छठे भाव का स्वामी है। इस लग्न के व्यक्तियों को यह रत्न कभी भी धारण नहीं करना चाहिए।
- तुला लग्न की कुण्डली में शनि चतुर्थ व पंचम भाव के स्वामी है। इस लग्न के व्यक्ति इस रत्न को धारण करने पर लाभ प्राप्त करेगें। नीलम पहनने से वाहन, संपत्ति और संतान सुख से जुड़े विषयों में सफलता मिलेगी।

वृश्चिक लग्न

वृश्चिल लग्न में मंगल लग्नेश होते है। इसलिए वृश्चिक लग्न के व्यक्ति मूंगा अवश्य धारण करें। लग्नेश मंगल का रत्न मूंगा आजीवन पहन सकते हैं।

- इस लग्न के लिये सूर्य दशम भाव के स्वामी है। व लग्नेश मंगल के मित्र भी है। इसलिए इस लग्न के व्यक्तियों के लिये माणिक्य रत्न राज्यकृपा, मानप्रतिष्ठा तथा नौकरी, व्यवसाय में उन्नति देता है। भाग्येश माणिक्य पहनने से मान-प्रतिष्ठा, उच्चाधिकारियों से लाभ होगा।
- इस लग्न के लिये चन्द्र नवम भाव के स्वामी है। नवम भाव भाग्य भाव है। इसलिये वृश्चिक लग्न के लिये मोती सभी रत्नों में सर्वश्रेष्ठ फलकारी रहते है। चंद्र का रत्न मोती पहनना भाग्यवर्धक साबित होगा।
- वृश्चिक लग्न के लिए बुध अष्टम भाव और एकादश भाव के स्वामी है। इस लग्न के व्यक्तियों को पन्ना रत्न धारण करने से बचना चाहिए इसके स्थान पर मोती धारण करना इस लग्न के लिये बेहद शुभ रहेगा।
- वृश्चिक लग्न के लिये गुरु दूसरे व पंचम भाव के स्वामी है। यह लग्नेश मंगल का मित्र भी है इसलिये इस लग्न के व्यक्ति पुखराज धारण कर सकते है, इसके साथ ही इन्हें मूंगा भी धारण करना चाहिए। पुखराज पहनने से

आर्थिक क्षेत्र, संतान सुख और अध्ययन क्षेत्र में क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।

- वृश्चिक लग्न के लिए शुक्र सप्तम व व्यय भाव के स्वामी होने के कारण मध्यम स्तरीय शुभ होते है इसलिये वृश्चिक लग्ने के व्यक्ति हीरा नहीं पहनें।
- वृश्चिक लग्न की कुण्डली में शनि तीसरे व चतुर्थ भाव के स्वामी है। इस लग्न के लिये ये शुभ नहीं है। इस स्थिति में इस लग्न के व्यक्तियों को नीलम रत्न धारण नहीं करना चाहिए।

धनु लग्न

लग्नेश व चतुर्थेश गुरु का रत्न पुखराज आजीवन धारण कर सकते हैं। इससे जीवन में उत्साह, मान-प्रतिष्ठा और भूमि-संपत्ति के मामलों से लाभ मिलेगा।

- धनु लग्न में सूर्य नवम भाव यानि भाग्य भाव के स्वामी है। इसके अतिरिक्त ये लग्नेश गुरु के मित्र भी है। धनु लग्न के व्यक्तियों का माणिक्य रत्न धारण करना सर्वश्रेष्ठ शुभ फल देता है। इसे धारण करने से इन्हें जीवन के सभी सुखों की प्राप्ति में सहायता मिलती है। भाग्य वृद्धि और पिता सुख में सहयोग मिलता है। भाग्येश सूर्य का रत्न माणिक्य पहनने से भाग्य की प्रबलता रहेगी।
- इस लग्न के लिये ये 5वें और 12वें भाव के स्वामी है। इस लग्न के व्यक्तियों का मंगल रत्न मूंगा धारण करना अनुकुल रहता है। इसे धारण करने से संतान सुख, बुद्धिबल, यश और प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। पंचमेंश मंगल का रत्न मूंगा पहनने से अध्ययन में सफलता मिलेगी।
- इस लग्न के लिये चंद्र अष्टम भाव के स्वामी है। धनु लग्न के व्यक्ति मोती रत्न कभी भी धारण न करें।
- इस लग्न में बुध की स्थिति सप्तमेंश और दशमेंश की होती है। इस लग्न के लिये बुध मध्यम स्तरीय शुभ है। इसे धारण करने से फल भी मध्यम स्तर के ही प्राप्त होगें।
- इस लग्न के व्यक्तियों को पुखराज रत्न अवश्य धारण करना चाहिए। इस लग्न के लिये गुरु लग्न व चतुर्थ भाव के स्वामी होते है।

- धनु लग्न के लिये शुक्र छठे व ग्यारहवें, स्थान का स्वामी होते है। इस लग्न के व्यक्ति भी आय वृद्धि के अलावा अन्य विषयों के लिये हीरा न पहनें।
- धनु लग्न के लिये शनि दूसरे व तीसरे स्थान का स्वामी है। कुंडली के इन दोनों भावों को अशुभ माना जाता है।

  केवल परिवार व संचय दोनों ही स्थितियों में इस रत्न को धारण किया जा सकता है। वह भी अगर शनि महादशा में धारण किया जाये तो शुभ रहता है।

मकर लग्न

मकर लग्न के शनि तीसरे भाव के स्वामी व लग्नेश होते है। लग्नेश होने के कारण शुभ ग्रह है। लग्नेश शनि का रत्न धारण करने से इस लग्न के व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा। लग्नेश व धनेश शनि का रत्न नीलम पहनने से व्यक्तित्व में निखार आएगा व आर्थिक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। नीलम आजीवन धारण कर सकते हैं।

- इस लग्न के लिये सूर्य अष्टम भाव के स्वामी है। लग्नेश शनि के शत्रु भी है। मकर लग्न के व्यक्ति माणिक्य रत्न कभी भी धारण न करें। मकर लग्न में मंगल चतुर्थ और एकादश भाव के स्वामी है। इस लग्न के व्यक्ति इसे महादशा में इसे धारण कर सकते है।
- मकर लग्न के लिये चन्द्र सप्तम भाव है। सप्तम भाव भी मारक भाव है। इस स्थिति में मोती रत्न विशेष परिस्थितियों में ही धारण करना चाहिए। ऐसे में इस रत्न को चन्द्र महादशा में धारण करना चाहिए।
- मकर लग्न में बुध षष्ठ भाव और नवम भाव के स्वामी होते है। यहां बुध भाग्येश होने के कारण विशेष रुप से शुभ हो जाते है। साथ ही लग्नेश शनि के मित्र भी है। इस लग्न के व्यक्ति इस रत्न को अवश्य धारण करें। उच्च शिक्षा व भाग्य की प्रबलता के लिए पन्ना धारण करना ठीक रहेगा।
- मकर लग्न के लिये गुरु तीसरे व द्वादश भाव के स्वामी होने के कारण अशुभ ग्रह हो जाते है। इस लग्न के व्यक्तियों को पुखराज रत्न धारण नहीं करना चाहिए।

- मकर लग्न के लिये शुक्र पंचमेंश व दशमेंश होते है। इस लग्न के लिये शुक्र शुभ फल देने वाले ग्रह है। अतः इस लग्न के व्यक्ति हीरा अवश्य धारण करें। हीरा पहनने से संतान, अध्ययन व प्रेम प्रसंग में अनुकूलता प्राप्त होगी।

कुंभ लग्न

कुंभ लग्न की कुण्डली में शनि एकादश व द्वादश स्थान का स्वामी है। कुंभ लग्न के व्यक्ति शनि रत्न नीलम धारण करें।

- लग्नेश शनि का रत्न नीलम पहनने से जीवन में उच्चाधिकार, मान-प्रतिष्ठा व स्थिरता की प्राप्ति होती है।
- कुंभ लग्न के लिये शुक्र चतुर्थेश व नवमेंश होते है। शुक्र यहां योगकारक ग्रह होने के कारण बेहद शुभ हो जाते है। अतः कुंभ राशि के व्यक्ति हीरा अवश्य धारण करें। हीरा पहनने से संपत्ति, वाहन व भाग्य की प्रबलता बनी रहेगी।
- कुम्भ लग्न के लिये सूर्य सप्तम भाव के स्वामी है। लग्नेश शनि से इनकी शत्रुता भी है। इसलिये जहां तक संभव हो इन्हें माणिक्य रत्न धारण करने से बचना चाहिए।
- कुम्भ लग्न में मंगल तीसरे व दशवें भाव के स्वामी है। मध्यम स्तर के शुभ होने के कारण इसे केवल मंगल महादशा में ही धारण करना चाहिए। इस लग्न के व्यक्ति इसे धारण न करके नीळम रत्न धारण करने तो अधिक शुभ रहेगा।
- कुम्भ लग्न के लिये चन्द्र छठे भाव के स्वामी है। कुम्भ लग्न के व्यक्ति मोती रत्न कभी भी धारण न करें।
- कुम्भ लग्न में बुध 5वें और 8वें भाव के स्वामी है। इस लग्न के व्यक्ति शिक्षा, संतान आदि विषयों को प्राप्त करने के लिये इस रत्न को धारण कर सकते है।
- कुम्भ लग्न के लिये गुरु दूसरे व एकादश भाव के स्वामी होते है। कुंभ लग्न का स्वामी शनि इनका मित्र भी नहीं है। इसलिये पुखराज रत्न को महादशा में या विशेष परिस्थितियों में धारण करना चाहिए। दशा-अंतर्दशा में पुखराज व मूंगा पहन सकते हैं, लेकिन माणिक्य व मोती कभी न पहनें।

मीन लग्न

लग्नेश व राज्येश गुरु का रत्न पुखराज पहनने से आरोग्य और मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। यह रत्न आजीवन पहनें।

- मीन लग्न के लिये सूर्य छठे भाव यानि रोग भाव के स्वामी है। लग्नेश गुरु के मित्र है। विशेष परिस्थितियों में भी केवल सूर्य महादशा में ही माणिक्य रत्न धारण करें। अन्यथा इसे धारण करना शुभ नहीं है।
- मीन लग्न के लिये चन्द्र त्रिकोण भाव के स्वामी है। यह भाव शुभ है। इसलिये इस भाव का रत्न धारण करना शुभ रहेगा। इसे धारण करने से व्यक्ति को संतान, विद्धा, बुद्धि का लाभ देते है।
- पंचमेंश चंद्रमा का रत्न मोती शिक्षा, संतान और प्रेम-प्रसंग में उपयोगी होगा।
- मीन लग्न में मंगल दूसरे व नवम भाव के स्वामी है। इस लग्न के व्यक्तियों को हमेंशा मूंगा रत्न धारण करके रहना चाहिए। यह रत्न इस लग्न के व्यक्तियों के भाग्य की बाधाओं को हटाने में सहयोग करेगा।
- धनेश व भाग्येश का रत्न मूंगा पहनने से आर्थिक क्षेत्र में सफलता मिलेगी व भाग्य भी साथ देगा।
- मीन लग्न के लिये बुध चतुर्थ और सप्तम भाव के स्वामी होते है। इस लग्न के लिये बुध सप्तमेंश बुध मारकेश होते है। इस कारण से इसे बुध कि महादशा अवधि में ही धारण करना अधिक उचित रहता है।
- इस लग्न के लिये गुरु लग्नेश व दशमेंश होने के कारण अत्यधिक शुभ ग्रह होते है। मीन लग्न के व्यक्तियों को पुखराज आजीवन धारण करके रखना चाहिए।
- मीन लग्ने के लिये शुक्र तृतीय भाव व अष्टम भाव के स्वामी है। इस लग्न के व्यक्ति हीरा धारण न करें।
- मीन लग्न की कुण्डली में शनि एकादश व द्वादश स्थान का स्वामी है। इस लग्न के व्यक्तियों को शनि रत्न नीलम धारण नहीं करना चाहिए।

ज्योतिष की विभिन्न पद्धतियों द्वारा रत्नों का चयन

विभिन्न विधियों द्वारा रत्नों का चयन किसी व्यक्ति विशेष के लिए किसी कुंडली को पढ़कर उसका भविष्य कथन करना जितना महत्वपूर्ण व अहम कार्य है उतना ही महत्वपूर्ण उस व्यक्ति विशेष के लिए रत्न का चुनाव करके बताना भी है।

इसमें विभिन्न ज्योतिषियों द्वारा रत्न निर्धारण के लिए भिन्न। भिन्न पद्ध तियां अपनाई जाती है, परंतु सभी का लक्ष्य एक ही होता है जातक की समस्या को दूर करना और जातक को वांछित लाभ पहुंचाना। कई बार रत्न चुनाव करते समय भिन्न-भिन्न व्यक्ति अपने सिद्धांत के अनुसार, एक ही व्यक्ति और एक ही समस्या या लाभ के लिए अलग-अलग रत्न बता सकते हैं।

जन्मकुंडली के आधार पर व्यक्ति के जन्म लग्न के आधार पर भाग्यशाली रत्न का चयन करना एक सरलतम विधि है जो प्रायः प्रयोग की जाती है। ज्योतिष के प्रारंभिक ज्ञान मात्र से आप यह विधि उपयोग में ला सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र में जन्म कुंडली में लग्न का स्थान विशेष महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्ति के तन, आचार। विचार, स्वास्थ्य, व्यक्तित्व आदि का द्योतक है।

ज्योतिष के अनेक विद्वान मात्र लग्नेश की स्थिति से रत्न का चयन करते हैं। लग्न द्वारा रत्न चुनने में इसलिए विभिन्न लग्नों वाली जन्मपत्री में त्रिकोण तथा केंद्र के कारक ग्रहों से संबंधित रत्न चयन करने पर बल दिया जाता है तथा निकृष्ट भावों 6, 8 तथा 12 वां भाव के स्वामी ग्रहों के रत्नों को सर्वथा त्याज्य माना जाता है।

अष्टक वर्ग द्वारा

ज्योतिष शास्त्र में अष्टक वर्ग की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके आधार पर यदि सर्वाष्टक वर्ग द्वारा किसी जन्म कुंडली का भविष्यफल भावों में स्थित शुभ रखाओं को देखकर किया जाए तो इसका फल अत्यंत सटीक हो सकता है।

अष्टक वर्ग द्वारा रत्न का चयन इस आधार पर करना चाहिए कि जिस ग्रह से संबंधित ग्रह का उपाय करना हो, वह ग्रह गोचरवश जब उस राशि में प्रवेश करे जिसमें उस ग्रह से संबंधित भिन्नाष्टक वर्ग में प्राप्त शुभ रेखाएं अधिक हों तो उस समय उस ग्रह से संबंधित ग्रह का रत्न धारण करके अधिक लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

किसी भी भिन्नाष्टक में किसी भी भाव में कम से कम शून्य शुभ रेखा हो सकती है जबकि अधिकतम शुभ रेखा 8 हो सकती है अर्थात औसतन जब 4 से अधिक रेखाएं होंगी तो उस राशि में ग्रह का गोचर शुभ फलदायक ही होगा। इष्ट फल और कष्ट फल के आधार पररू कुछ विद्वान ज्योतिषी ग्रहों के बल के आधार पर भी ग्रहों के रत्नों का निर्धारण करते हैं।

इसमें देखा जाता है कि किस ग्रह का बल सबसे अधिक है। अधिक में भी यह देखना आवश्यक है कि उस ग्रह के रत्न धारण करने से कितने प्रतिशत इष्ट फल मिलेगा और कितने प्रतिशत कष्ट फल मिलेगा क्योंकि प्रत्येक ग्रह से कष्ट फल और इष्ट फल प्राप्त होते हैं। अतः रत्न का निर्धारण करने से पूर्व यह देखना आवश्यक है कि अशुभ ग्रह का इष्ट फल कष्ट फल से अधिक होना चाहिए।

कृष्णामूर्ति पद्धति द्वारा

कृष्णामूर्ति पद्धति में प्रत्येक भाव के कारक ग्रह कुंडली के आधार पर निश्चित किए जाते हैं और इसी प्रकार इसके विपरीत प्रत्येक ग्रह कुछ भावों का कारक होता है। अतः यदि हम किसी जन्मकुंडली के भावों के कारक ग्रहों को जान जाएं तो व्यक्ति को जिस भाव से संबंधित फल की आवश्कता हो उस भाव के सबसे प्रबल कारक ग्रह का रत्न धारण करवाकर उस भाव से संबंधित फल प्राप्त कर सकते हैं।

इसके विपरीत हम कुंडली में रत्न चयन के लिए ऐसे ग्रह के रत्न का चुनाव कर सकते हैं जो ग्रह कुंडली में अधिक से अधिक शुभ भावों का कारक ग्रह है। इस आधार पर रत्न चयन करके हम उस रत्न का अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

लाल किताब द्वारा

लाल किताब में राशियां नहीं लिखी जाती हैं, परंतु पहले भाव में मेष राशि और इसी प्रकार क्रमशः बारहवें भाव में मीन राशि मानी जाती है और अन्य पद्धति के समान इसमें भी लग्न की गणना की जाती है। किसी कुंडली में ग्रह यदि बलवान हैं।

लाल किताब की भाषा में कहें तो यदि वह अपने पक्के घरों में स्थित हैं। तो उनसे संबंधित रत्न का चयन किया जा सकता है। परंतु यदि कुंडली में शक्तिशाली ग्रह अथवा ग्रहों का अभाव हो तो आप सुप्त ग्रह तथा सुप्त भाव को बलवान बनाने की प्रक्रिया अपनाएं।

यह विधि जितनी सरल है उतनी ही प्रभावशाली सिद्ध होगी। जब कोई ग्रह किसी अन्य ग्रह को नहीं देखता तो वह ग्रह सुप्त कहलाता है। भाग्य के लिए सर्वोत्तम ग्रह के अनुरूप रत्न। उपरत्न आदि का चयन आप निम्न चार बातों की सहायता से कर सकते हैं। जिस राशि में ग्रह उच्च का होता है और लाल किताब की कुंडली के अनुसार भी उसी भाव अर्थात राशि में स्थित होता है तो उससे संबंधित रत्न भाग्य रत्न होता है।

यदि ग्रह अपने स्थायी भाव में स्थित हो तथा उसका कोई मित्र ग्रह उसके साथ हो अथवा उसको देखता हो तो उस ग्रह से संबंधित रत्न भाग्य रत्न होता है। नौ ग्रहों में से जो ग्रह श्रेष्ठतम भाव में स्थित हो, उस ग्रह से संबंधित रत्न भाग्य रत्न होता है। कुंडली के केंद्र अर्थात भाव 1, 4, 7 तथा 10 में बैठा ग्रह भी भाग्यशाली रत्न इंगित करता है।

यदि उक्त भाव रिक्त हों ता नौवें, नौवां रिक्त हो तो तीसरे, तीसरा रिक्त हो तो ग्यारहवें, ग्यारहवां रिक्त हो तो छठे और यदि छठा भाव भी रिक्त हो तो बारहवें भाव में बैठा ग्रह भाग्य ग्रह कहलाता है। इस ग्रह से संबंधित रत्न भी भाग्य रत्न कहलाता है। जिस भाव पर किसी भी ग्रह की दृष्टि नहीं हो अर्थात जो भाव किसी भी ग्रह द्वारा देखा नहीं जाता हो वह सुप्त भाव कहलाता है। यदि इन भावों को चैतन्य कर देने वाले ग्रहों का उपाय किया जाए तो ये चैतन्य हो जाएंगे तथा इन भावों से संबंधित विषय में व्यक्ति को आशातीत लाभ मिलने लगेगा।

अंक ज्योतिष में तीन प्रकार के अंक महत्वपूर्ण माने गए हैं। इसमें मूलांक को ध्यान में रखते हुए रत्न धारण करना लाभप्रद रहता है। मूलांक का निर्धारण जन्म तिथि के आधार पर निर्धारित होता है। भिन्न तिथियों में जन्म लेने वाले व्यक्तियों के मूलांक को ध्यान में रखते हुए शुभ रत्न का चयन निम्न प्रकार से किया जा सकता है।

मूलांक 1 (जन्म तारीख - 1, 10 19, 28) :

ये बेहद महत्वकांक्षी, आविष्कारक, दृढ-निश्चयी, जिद्दी, बंधन पसंद न करने वाले, जहां भी होते हैं, अपना वर्चस्व बनाकर रखते हैं।

संचालक ग्रह	- सूर्य	**मित्र अंक**	- 2, 3
शुभ दिन	- रविवार, सोमवार	**शुभ रत्न**	- माणिक्य
शुभ रंग	- सुनहरा, पीला भूरा	**शुभ धातु**	- तांबा, सोना

मूलांक 2 (जन्म तारीख - 2, 11, 20, 29) :

ये सौम्य, कल्पनाशील, विचार एवं संवेदनशील, भावुक, अछे परामर्शदाता, अध्यात्मिक, एकांतप्रिय, सत्यवादी तथा स्पष्टवक्ता, समझदार, भावुक व होशियार होते हैं। माता-पिता की सेवा करते हैं। जरा सा तेज बोलना इन्हें ठेस पहुँचाता है। इनमें नेतृत्त्व का अद्‌भुत गुण होता है।

संचालक ग्रह	- चन्द्रमा	**मित्र अंक**	- 1, 4, 7
शुभ दिन	- रविवार, सोमवार	**शुभ रत्न**	- मोती, मून स्टोन
शुभ रंग	- सफेद, क्रीम, हलके रंग	**शुभ धातु**	- चाँदी, प्लेटिनम

मूलांक 3 (जन्म तारीख - 3, 12, 21, 30) :

ये महत्वाकांक्षी, गर्वीले, बेहद स्वतंत्र विचारों वाले, न्याय एवं अनुशासन प्रिय, थोड़े से तानाशाह, घमंडी एवं बुलंद हौसले, स्वाभिमानी तथा उच्च पदस्थ वाले होते हैं। ये अच्छे सलाहकार बनते हैं।

संचालक ग्रह	- बृहस्पति	**मित्र अंक**	- 6, 9
शुभ दिन	- मंगल, गुरु	**शुभ रत्न**	- सुनैहला, पुखराज
शुभ रंग	- पीला	**शुभ धातु**	- सोना

मूलांक 4 (जन्म तारीख - 4, 13, 22, 31) :

ये थोडा विद्रोही, बुद्धिमान, हर बात बिलकुल विपरीत नजरिए से देखने वाले, अतिवादी प्रविति के, बेपरवाह होते हैं। जोखिम लेना इनका स्वभाव होता है। इन्हें अनुशासन में रखना जरूरी है। ये व्यसनाधीन हो सकते हैं।

संचालक ग्रह	- राहु	**मित्र अंक**	- 1, 2, 7
शुभ दिन	- शनिवार और मंगलवार	**शुभ रत्न**	- नीलम, गोमेद
शुभ रंग	- नीला, सिलेटी व काला	**शुभ धातु**	- तांबा

मूलांक 5 (जन्म तारीख - 5, 14, 23) :

ये बेहद हिम्मतवाले, जोखिम उठाने वाले, बुद्धिमान, धनी, बेहद दोस्ताना स्वभाव वाले, शांत, आशावादी होते हैं। रिसर्च के कामों में रुचि लेते हैं। इनके साथ धैर्य से व शांति से बातचीत करें।

संचालक ग्रह	- बुध	**मित्र अंक**	- सभी अंक मित्र हैं
शुभ दिन	- बुधवार	**शुभ रत्न**	- पन्ना, हीरा।
शुभ रंग	- सभी हल्के रंग	**शुभ धातु**	- चाँदी, प्लेटिनम

मूलांक 6 (जन्म तारीख - 6, 15, 24) :

ये मधुर स्वभाव वाले, हँसमुख, शौकीन मिजाज व कला प्रेमी, बुद्धिमान तथा प्रेम करने वाला सुन्दर व्यक्तित्व रखते हैं।

संचालक ग्रह	- शुक्र	**मित्र अंक**	- 3, 9
शुभ दिन	- शुक्रवार	**शुभ रत्न**	- हीरा
शुभ रंग	- गुलाबी	**शुभ धातु**	- सोना, प्लेटिनम

मूलांक 7 (जन्म तारीख - 7, 16, 25) :

ये भावुक, निराशावादी, तनिक स्वार्थी मगर तीव्र बुद्धि के, अध्यात्मिक, पैसों तथा भौतिक ऐश्वर्य के प्रति उदासीन, थोड़े जिद्दी, और अकेले कार्य करना पसंद करते हैं। व्यसनाधीन जल्दी होते हैं। कलाकार हो सकते हैं। इन्हें कड़े अनुशासन व सही मार्गदर्शन की जरूरत होती है।

संचालक ग्रह	- केतु	**मित्र अंक**	- 1, 2, 4
शुभ दिन	- मंगलवार	**शुभ रत्न**	- लहसुनिया
शुभ रंग	- सलेटी	**शुभ धातु**	- सोना, प्लेटिनम

मूलांक 8 (जन्म तारीख - 8, 17, 26) :

ये तनिक स्वार्थी, भावुक, अति व्यावहारिक, मेंहनती व व्यापार बुद्धि वाले, भौतिकवादी, धार्मिक, सज्जन स्वाभाव के, अपने ध्येय पर सदैव दृष्टि रखते हैं, अवसरवादी तथा आशावादी होते हैं। जीवन में देर से गति आती है। इन्हें सतत सहयोग व अच्छे साथियों की जरूरत होती है।

संचालक ग्रह	- शनि	**मित्र अंक**	- 1, 5, 6
शुभ दिन	- शन्विार, मंगलवार	**शुभ रत्न**	- नीलम, हीरा
शुभ रंग	- गहरा नीला	**शुभ धातु**	- सोना

मूलांक 9 (जन्म तारीख - 9, 18, 27) :

ये दृढ निश्चयी तथा प्रबल इच्छाशक्ति वाले, सर्वत्र विजेता, बेहद स्वतंत्र विचारों वाले, गुस्सेवाले परन्तु दयालु, ऊर्जावान, शैतान व तीव्र बुद्धि के विद्रोही होते हैं। माता-पिता से अधिक बनती नहीं है। प्रशासन में कुशल होते हैं।

संचालक ग्रह	- मंगल	**मित्र अंक**	- 3, 6
शुभ दिन	- मंगलवार, बृहस्पति वार	**शुभ रत्न**	- रूबी, मूंगा
शुभ रंग	- लाल	**शुभ धातु**	- तांबा, सोना

हस्त रेखाओं के आधार पर रत्न चयन

हस्त रेखाओं के माध्यम से रत्न चयन के सूत्र जटिल हैं तथापि कुछ ऐसे भी हैं जो जनसाधारण अपने लिए प्रयोग कर लाभ उठा सकते है। नौ ग्रहों के नौ रत्न प्राचीन शास्त्रों में स्पष्ट उल्लेख मिलता है कि सूर्यादि नौ ग्रहों के प्रतिनिधि माणिक्य, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद और लहसुनिया आदि नौ रत्न है।

इन रत्नों के अद्भुत प्रभाव को व्यक्तियों ने स्वीकारा है तथा विभिन्न ग्रहों से संबंधित समस्याओं को दूर करने के लिये और वांछित लाभ पहुंचाने के लिये उनका रत्न धारण कराया जाता है।

1. स = स्वास्थ्य रेखा
2. सू = सूर्य रेखा
3. त्रि = त्रिभुज रेखा
4. च = चर्तुभुज रेखा
5. ज = जीवन रेखा
6. म = मस्तिष्क रेखा
7. मं = मंगल रेखा
8. भ = भाग्य रेखा
9. वि = विवाह रेखा
10. सं = संतान रेखा
11. चिं = चिंता रेखा
12. बु = बुध रेखा
13. मणि = मणिबंध रेखा
14. शु = शुक्र पर्वत
15. श. = शनि पर्वत
16. र. = रवि पर्वत
17. गु. = गुरु पर्वत

पर्वतो के आधार पर रत्न धारण यदि हथेली पर कोई पर्वत सामान्य स्थिति एवं उभार लिये हुये होगा तो व्यक्ति अपने जीवन एवं उन पर्वतों की विशेषताओं के अनुसार सकारात्मक भावना रखेगा।

उसके महत्व एवं प्रभाव को बढ़ाने के लिये उसे उससे संबंधित रत्न पहनना चाहिये। यदि कोई पर्वत कम उभार लिये हुये होगा तो व्यक्ति जिंदगी के प्रति उदासीन होगा एवं किसी कार्य को करने में रूचि नहीं लेगा। अतः उसके प्रभाव को बढ़ाने के लिए भी उस पर्वत के ग्रह से संबंधित रत्न पहनना चाहिये।

विशेष ध्यान दिया जाना चाहिये कि यदि किसी भी पर्वत पर नकारात्मक चिन्ह जैसे कि बिंदु, क्रॉस द्वीप जाल इत्यादि पाये जायें तो उस पर्वत से संबंधित रत्न धारण नहीं करना चाहिये। और अगर किसी पर्वत पर सकारात्मक चिह्न जैसे कि वर्गए त्रिकोण, त्रिशूल, शंख इत्यादि पाये जायें तो उस पर्वत से संबंधित रत्न धारण किया जा सकता है।

रेखाओं के आधार पर रत्न धारण हथेली पर पायी जाने वाली रेखायें उनसे संबंधित ग्रहों के अनुसार उनके व्यावहारिक लाभों की ओर संकेत करती हैं। यदि हथेली पर लंबीए स्वस्थ एवं सुंदर रेखायें हों तो उनसे संबंधित ग्रहों के अनुसार उनके व्यावहारिक लाभों की ओर संकेत करती हैं।

यदि हथेली पर लंबी, स्वस्थ एवं सुंदर रेखायें हो तो व्यक्ति अपने जीवन में उनसे संबंधित विशेषताओं के अनुसार सकारात्मक भावना रखेगा एवं उसके महत्व तथा प्रभाव को बढ़ाने के लिये उससे संबंधित रत्न पहनना चाहिये। स्वस्थ, महीन, लंबी तथा सुंदर रेखाएं अच्छा प्रभाव देती हैं तथा उसके प्रभाव को बढ़ाने के लिये उससे संबंधित रत्न धारण करना चाहिये।

गुलाबी एवं लाल रेखायें जोशीले एवं सकारात्मक सोच की ओर संकेत करती है तथा उससे संबंधित रत्न धारण भी फलदायक है। जंजीरदार रेखाएं, पुच्छदार रेखाएं, टूटी हुई रेखाएं, द्वीपयुक्त रेखाएं, असामान्य रेखाएं इत्यादि खतरनाक संकेत तथा नकारात्मक प्रभाव देती हैं।

अतः व्यक्ति को उनसे संबंधित रत्न नहीं पहनना चाहिये बल्कि उनके उपाय के लिये मंत्र जाप या उनसे संबंधित दान करना चाहिये।

लग्नानुसार रत्नों से स्वास्थ्य विचार

रत्न न केवल सौन्दर्य का प्रतीक है वरन यह चिकित्सा पद्धति का भी अंग है। इसका उल्लेख आयुर्वेद की प्रसिद्ध पुस्तक चरक संहिता में हुआ है। आयुर्वेद के अनुसार रोगनाश करने की जितनी क्षमता औषधि सेवन में है उसी के समान रत्न धारण करने में भी है। आचार्य दण्डी रत्न की विशेषता बताते हुऐ कहते है - अचिन्त्यों ही मणिमत्रौषधीनां प्रभावाः।

रत्नों में सौन्दर्य ही नही, स्वास्थ्य और समृद्धि भी। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार रोगों की उत्पत्ति अनिष्ट ग्रहों के प्रभाव से एवं पूर्वजन्म के अवांछित संचित कर्मो के प्रभाव से बताई गई है। अनिष्ट ग्रहों के निवारण के लिए पूजा, पाठ, मंत्र जाप, यंत्र धारण, विभिन्न प्रकार के दान एवं रत्न धारण आदि साधन ज्योतिष शास्त्र में उल्लिखित हैं।

लग्न संपूर्ण कुण्डली की पृष्ठभूमि होता है इसके द्वारा व्यक्ति के गुणों व अवगुणों का अवलोकन करने में सहायता प्राप्त होती है। यह व्यक्ति के शरीर, शरीर की बनावट, व्यक्तित्व, स्वभाव और रुप की व्याख्या करता है। इससे रोगों का भी विचार किया जाता है। इसलिए अपने स्वास्थ्य सुख को बनाए रखने और निरोगी रहने के लिए लग्नेश का रत्न धारण करना विशेष रुप से शुभ रहता है।

लग्नेश का रत्न धारक के शरीर को बल प्रदान करता है। रोगों के शीघ्र प्रभाव में आने से बचाता है। सभी मनुष्यों को उनकी लग्नानुसार कुछ रोग अधिक होने की संभावना रहती है। आईये आपको बताते है कि स्वयं को रोगमुक्त रखने के लिए आप कौन सा रत्न धारण करें, जिससे आपको होने वाले रोग आपके शारीरिक कष्ट का कारण न बन सकें।

मेष लग्न

मेष लग्न का स्वामी मंगल है। इस लग्न के व्यक्तियों को थकान और सिर दर्द शीघ्र परेशान करता है तथा पाचन तंत्र विकार और नेत्र रोगों से ग्रसित रहना पड़ता है। इन्हें सदैव स्वस्थ बने रहने के लिए मंगल रत्न मूंगा जीवन भर के लिए धारण करके रहना चाहिए।

मूंगा रक्त विकार दूर करता है। रक्तचाप को नियंत्रित रखने में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके अतिरिक्त मूंगे के साथ मोती एवं पुखराज धारण करें। मोती धारण करना पित्त रोगों में और पुखराज लिवर समस्याओं से बचाएगा।

वृष लग्न

वृष लग्न का स्वामी शुक्र है। इस लग्न के व्यक्तियों को गले, नाक और छाती के रोग हो सकते हैं तथा भोजन में अशुद्धता के कारण उल्टी, दस्त और पेट में जलन की समस्या सामान्य रुप से हो सकती है। साथ ही खसरा, नेत्र एवं दंत रोगों के प्रभाव व उच्च अथवा निम्न रक्तचाप से भी पीड़ित होने की संभावनाएं बन रही है।

अतः इस लग्न के व्यक्ति हीरा रत्न धारण कर अपने स्वास्थ्य को सकारात्मक बनाए रख सकते है। हीरे के साथ पन्ना और नीलम भी पहनें। पन्ना त्वचा रोगों से और नीलम आशावादी बनाए रखेगा।

मिथुन लग्न

मिथुन लग्न के जातकों को गैस, चर्म रोग और अपच की शिकायत प्रायः होती होगी। इसके अलावा जीवन में पक्षाघार, मिर्गी, श्वासनली और अस्थमा रोगों से बचने का प्रयास करना चाहिए। इसलिए बुध रत्न पन्ना धारण करना इनके स्वास्थ्य को उत्तम बनाए रखेगा। साथ ही स्वास्थ्य सुख को उत्तम बनाए रखने के लिए पन्ना रत्न के साथ हीरा व नीलम भी धारण करना लाभप्रद रहेगा। हीरा रत्न मधुमेंह और नीलम गठिया रोगों से बचाएगा।

कर्क लग्न

कर्क लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों को खांसी, जुकाम, छाती में दर्द, ज्वर, पसलियों में दर्द इत्यादि शरद ऋतु के रोग भी समय-समय पर कष्ट देते रहते है। इनका पाचन तंत्र शीघ्र खराब हो जाता है इन्हें आजीवन मोती रत्न धारण करना चाहिए। यह हृदय, दिमागी व रक्त विकारों को दूर रखने में सहयोग करेगा।

इसके अतिरिक्त मोती धारण करने पर इनका पुराना दमा, किडनी, गालस्टोन, हैजा आदि रोग और स्त्रियों को माहवारी में भी कष्ट से राहत मिल सकती है। इस रत्न के साथ-साथ माणिक्य, मूंगा और पुखराज भी धारण करें। माणिक्य पेट के रोग और पुखराज जांघ के रोगों से बचाएगा।

सिंह लग्न

सिंह लग्न सूर्य ग्रह के स्वामित्व के अंतर्गत आती है, इस लग्न के व्यक्तियों को रक्त विकार, रक्त स्त्राव, रक्त की कमी और रक्तचाप की अनियमितता जैसे रोग हो सकते है। इसके ऐसे व्यक्तियों को अतिरिक्त पीठ, कमर एवं जोड़ों के दर्द भी शीघ्र अपने प्रभाव में ले सकते है।

अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना इनके स्वाथ्य के लिए लाभप्रद रहेगा। इस रत्न की शुभता से अस्थितंत्र मजबूत होगा, शारीरिक कमजोरी, नेत्र रोग और हृदय गति पहले से अच्छी होगी। इसके साथ ही मूंगा और पुखराज भी धारण करें। मूंगा रक्त विकारों से और पुखराज कुल्हे के रोगों से बचाएगा।

कन्या लग्न

कन्या लग्न का स्वामी बुध है। इस लग्न के जातको को उदर रोग, छोटी और बड़ी आंत, कमर दर्द और अनिद्रा जैसे रोगों के कारण स्वास्थ्य विकारों का सामना करना पड़ता है।

बुध की पूर्ण शुभता प्राप्ति और शरीर को स्वस्थ रखने के लिए ये पन्ना धारण करें। इसे धारण करने से मानसिक रोग अधिक कष्ट नहीं दे पायेंगे। इस रत्न के साथ-साथ हीरा और नीलम भी धारण करना चाहिए। हीरा रत्न मूत्र संबंधी रोग और नीलम जोड़ो के दर्द में राहत देगा।

तुला लग्न

आपके लग्न का स्वामी शुक्र है। जनेन्द्रियों कमर, नाभि से संबंधित रोगों के कारण आपका स्वास्थ्य कष्टमय हो सकता है। लग्नेश शुक्र का हीरा रत्न धारण करने से आपके स्वाथ्य सुख में वृद्धि होगी। यह रत्न त्वचा रोगों का निवारण करेगा एवं थाइराइड, वीर्य दोष को भी शीघ्र दूर करने में सहयोग करेगा।

आपके लिए हीरा रत्न, नीलम एवं पन्ना रत्न धारण करना भी उत्तम रहेगा। पन्ना रत्न आपको एलर्जी और नीलम रत्न आपके गठिया रोगों में कमी करेगा।

वृश्चिक लग्न

वृश्चिक लग्न का स्वामित्व मंगल को प्राप्त है। इस लग्न के जातकों को अंडकोश व गर्भाशय संबंधित परेशानियां जल्द परेशान करती है। संतान होने में भी विशेष कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। स्वयं को स्वस्थ बनाए रखने के लिए मूंगा धारण करें। यह रत्न रक्त एवं हृदय विकारों को दूर करेगा साथ ही पुखराज और मोती भी धारण करें। पुखराज मांसपेशियों से संबंधित और मोती नेत्र रोगों का निवारण करेगा।

धनु लग्न

धनु लग्न में जन्म लेने वाले व्यक्तियों पर गुरु ग्रह का प्रभाव अधिक रहता है। इन्हें कूल्हे, जांघ और मांसपेशियों में खिंचाव जैसे स्वास्थ्य परेशानियां बार-बार हो सकती है। साथ ही इस लग्न के कारण ये व्यक्ति मोटापा और हड्डियों का टूटने जैसे रोगों से भी रोग्रग्रस्त हो सकते हैं।

इस स्थिति से बचने के लिए इन्हें पुखराज रत्न धारण करें। पुखराज की शुभता से लीवर, जिगर व पेट के रोगों से राहत मिलेगी। पुखराज रत्न के साथ-साथ मूंगा और माणिक्य भी धारण करना लाभकारी रहेगा। साथ ही इस लग्न के व्यक्तियों को मूंगा रत्न रक्त अल्पता और माणिक्य हृदय रोग से बचाएगा।

मकर लग्न

मकर लग्न के व्यक्तियों को गठिया, रक्त विकार, चर्म रोगों से पीड़ित होने के योग दे रहा है। शरीर को स्वस्थ बनाए रखने के लिए ऐसे व्यक्ति शनि रत्न नीलम धारण करें। इसके साथ ही नीलम रत्न दिमागी रोगों और निराशा से भी मुक्त करेगा। इस रत्न के अतिरिक्त हीरा एवं पन्ना रत्न भी धारण करें। हीरा जनेन्द्रिय संबंधी रोग और पन्ना उदर रोग में रक्षा करेगा।

कुंभ लग्न

कुम्भ लग्न शनि का लग्न है। इस लग्न के प्रभाव से पैरों से संबंधित रोग, नेत्र रोग व रक्त विकार हो सकते हैं। इसके साथ ही इसके कारण शुगर एवं पेट के रोग परेशान कर सकते है। रोगों में कमी करने के लिए नीलम रत्न धारण करें साथ ही पन्ना और हीरा रत्न भी पहनें। पन्ना आंत के रोगों और हीरा थायराइड जैसे रोगों में लाभ देगा।

मीन लग्न

जिनका जन्म मीन लग्न् में हुआ हो उनको संक्रामक रोग, मानसिक तनाव एवं मोटावा परेशान कर सकता है। इसके अतिरिक्त लीवर के रोग भी कष्ट दे सकते हैं। लग्नेश गुरु का पुखराज रत्न धारण करना इनके स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहेगा। इसके साथ ही मोती और मूंगा भी धारण कर स्वयं को निरोगी रख सकते हैं। मोती रत्न दमा और माणिक्य रक्तचाप संबंधी रोगों को दूर करने में सहयोग करेगा।

जन्म नक्षत्र अनुसार औषधि

जन्म न.	वृक्ष	जन्म न.	वृक्ष	जन्म न.	वृक्ष	जन्म न.	वृक्ष
अश्विनी	कुचिला	पुष्य	पीपल	स्वाती	अर्जुन	अभिजित	पनस
भरणी	आम्ला	अश्लेषा	नागकेशर	विशाखा	विकंकत	श्रवण	मदार
कृतिका	गूलर	मघा	बरगद	अनुराधा	मोलश्री	धनिष्ठा	शमी
रोहिणी	जम्बू	पू. फा.	ढाक	ज्येष्ठा	चीड़	शतभिषा	कदम्ब
मृगशिरा	खादिर	उ. फा.	पाकड़	मूल	शाल	पू. भा.	आम
आर्द्रा	शीशम	हस्त	रीठा	पू. षा	जलवेत्स	उ. भा.	नीम
पुनर्वसु	बांस	चित्रा	बेल	उ. षा	कटहल	रेवती	महुआ

कार्यक्षेत्रानुसार रत्न चयन

आप किसी भी क्षेत्र में हों, नौकरी करते हों या निजी व्यवसाय में रत हों, शिक्षण संस्थान से जुड़े हों अथवा अन्वेषण विभाग में कार्यरत हों, यात्रा-देशाटन, मेंडिकल चाहे जिस विभाग में कार्यरत हों, उसमें अच्छी सफलता के लिए रत्नों का चुनाव जरुरी है। क्योंकि ये रत्न ही होते हैं, जो आपकी ऊर्जा व क्षमता को बढ़ाते हैं अथवा उसमें सहयोग करते हैं। कार्यक्षेत्र के अनुसार कौनसा रत्न धारण किया जा सकता है इसकी जानकारी नीचे दी जा रही है :

माणिक्य

रत्न कार्य-व्यापार से जुड़े लोग, सरकारी कर्मचारी, राजनेता, निजी फर्मों में कार्यरत मेंनेजर या ऊंचे हदे का कारोबार करने वाला व्यक्ति, सुनार, पैतृक व्यवसाय, हड्डी रोग विशेषज्ञ, डॉक्टर, किसान विशेष कर गेहूं का व्यापार, ठेकदार, हृदय रोग डॉक्टर आदि।

मोती

चांदी का व्यापार करते हों अथवा मनोचिकित्सा विभाग से जुड़े हों या मनोचिकित्सक, पानी से संबंधित कारोबार करने वाले, ट्रैवल उद्योग में कार्यरत व्यक्ति, व्यवसायी या कर्मचारी, प्लास्टिक उद्योग में कार्यरत व्यक्ति, व्यापारी, नर्सिंग होम में कार्यरत व्यक्ति, स्त्री रोग विशेषज्ञ, चावल-धान के व्यापारी, देशाटन, घूमने फिरने वाले लोग आदि।

मूंगा

मेंट्लर्जिकल इंजीनियर, प्रॉपर्टी खरीद-बिक्री का कार्य, बिजली कर्मचारी अथवा बिजली विभाग से जुड़ा श्रमिक, मिस्त्री, कोर्ट व वकालत का कार्य करने वाले, होटल में कूक, सैलून में कार्यरत, हेयर कटिंग का व्यवसाय करने वाले, ब्लड बैंक से जुड़े व्यक्ति, सर्जन, अस्त्र-शस्त्र से जुड़े उद्योग्य अथवा इसके निर्माता। मूंगा धारण कर सकते हैं।

पन्ना

बीमा उद्योग में कार्य करने वाले, बीमा व्यवसाय के एजेंट, अकाउंटेंट, दलाली उद्योग, लेखक, संपादक, प्रकाशण विभाग, अध्यापन व्यवसाय, बैंक कर्मचारी, कोरियर व्यवसाय, आढ़त का व्यवसाय, नगर-निगम में कार्यरत कर्मचारी। इन सभी के लिए पन्ना रत्न शुभफलदायक रहता है।

पुखराज

बैंक में नौकरी करने वाले, शिक्षक, शिक्षण संस्थान से जुड़े व्यक्ति, प्रोफेसर या लैक्चरर, जज, ज्योतिषी, प्रकाशक, मेंनेजमेंट, कंसलटेंट, धर्म शिक्षक या धर्म गुरु। इन सभी के लिए पुखराज शुभ व ऊर्जाकारक रत्न है।

हीरा

इलेक्ट्रॉनिक्स में कार्यरत व्यक्ति, फिल्म मेंकर, टी बी, नाटक के कलाकार, कर्मी, संगीत, गायन से जुड़ी व्यक्ति, कम्प्यूटर ऑपरेटर, फोटोग्राफर, ज्वैलर्स, फाईव स्टार होटल में कार्यरत व्यक्ति, सर्विस उद्योग का व्यक्ति, विज्ञापन एजेंसी, ब्यूटी पार्लर, मॉडलिंग, फूलों का व्यापारी, फैशन उद्योग का व्यक्ति, आर्किटेक्ट, इत्र व्यवसायी, सौंदर्य प्रसाधन से जुड़ा व्यक्ति आदि।

नीलम

रबर-उद्योग में कार्यरत व्यक्ति, दांतों का डाक्टर, सफाई कर्मचारी, कृषि कर्मचारी, पेट्रोलियम पदार्थों से जुड़े व्यापार में कार्यरत व्यक्ति अथवा व्यवसायी, खनन उद्योग, खनिज इंजीनियर, प्लेसमेंट कंपनियों में कार्यरत व्यक्ति, श्रमिक ठेकेदार, धातु व्यवसाय से जुड़ा व्यक्ति, खाद्य तेल का डीलर आदि।

रत्न	रोजगार	रत्न	रोजगार	रत्न	रोजगार
माणिक्य	चिकित्सा, राजसेवा	**पन्ना**	लेखा कार्य	**नीलम**	इंजी. लोहा
मोती	डिजाइनिंग, डेरी	**पुखराज**	अध्यापन	**गोमेद**	राजनीति
मूंगा	सैन्य कार्य, खेल	**हीरा**	अभिनय	**लहसुनिया**	कठिन कार्य

रत्न को कैसे परखें और रत्न की शुभता की परख कैसे करें?

ज्यातिष के उपायों में रत्नों का प्रभाव सर्वमान्य व महत्वपूर्ण हैं। जितना महत्वपूर्ण कुंडली के आधार पर रत्नों का चुनाव हो उतना ही महत्वपूर्ण रत्न खरीदते समय उसकी गुणवत्ता तथा रंग, आकृति आदि का ध्यान रखना है। अंततः रत्न की गुणवत्ता प्रयोगशाला में जानी जा सकती है परंतु कुछ मूलभूत पहचान निम्न तरीकों से भी की जा सकती है। रत्नों के गुण और पहचान इसके सामान्य गुण व पहचान की विधि विस्तृत रूप से दी गयी है।

माणिक्य

माणिक्य को सूर्य ग्रह का रत्न कहा जाता है। यह लाल रंग का होता है। 24 रत्ती से अधिक का हो तो लाल कहलाता है। यह एक मूल्यवान रत्न हैं। जिस माणिक्य को प्रातः काल सूर्य के सामने रखते ही उसमें से लाल रंग की किरणें चारों तरफ बिखरने लगें वह माणिक्य उत्तम गुण का माना जाता है। अगर माणिक्य को पत्थर पर घिसने पर वह न घिसे और उसका वजन न घटे और उसकी शोभा और बढ़ जाए तो उसे शुद्ध समझना चाहिए।

अंधकार में रखने पर यदि वह सूर्य की आभा के समान चमकता हो तो वह श्रेष्ठ माणिक्य होगा। सौगुने दूध में माणिक्य को डालने से दूध लाल दिखाई दे अथवा लाल किरणें निकलने लगें तो वह उच्च कोटि का माणिक्य होता है। प्रातः काल सूर्य के सामने दर्पण पर माणिक्य को श्रेष्ठ माणिक्य को आंखों पर रखने से ठंडक मालूम होती है। अगर रत्न में बुलबुले दें या रत्न हल्का हो तो उसे बनावटी समझना चाहिए।

अगर कोई चीर अथवा लकीर दिखाई दे, तो यह दोषपूर्ण माणिक्य है। कृत्रिम रत्नों में रेशा होता है। यह रूखा और सफेद होता है। माणिक्य की परत सीधी और नकली की परत बलयाकार होती है। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण अंतर है। अगर श्रेष्ठ माणिक्य को बर्फ के टुकड़े के ऊपर रख दिया जाए तो जोर की आवाज आती है। इसके विपरीत नकली होगा तो कोई आवाज नहीं आएगी।

मोती

मोती चंद्र ग्रह का रत्न है। इसका रंग सफेद होता है। यह खनिज नहीं। बल्कि जैविक पदार्थ है। भारत में प्राचीन मान्यता के अनुसार मोती आठ प्रकार के होते हैं- अभ्र मोती, शंख मोती, शुक्ति मोती, सर्प मोती, गज मोती, बांस मोती, शूकर मोती और मीन मोती। इन मोतियों की उत्पत्ति अलग-अलग प्रकार से होती है। चावल में मोती को रगड़ने से सच्चे मोती की चमक और ज्यादा बढ़ जाती है जबकि कल्चर मोतियों की चमक कम हो जाती है।

जब असली मोतियों को समुद्र से प्राप्त किया जाता है। तब उस स्थिति में ये गोल आकार के न होकर लम्बें, चपटे या टेढ़े-मेंढ़े होते है। जिन्हें बाद में प्रयोगशाला में सही आकार दिया जाता है। आजकल कई देशों में कृत्रिम मोती भी बनाये जाते है।

कृत्रिम मोती के अन्दर एक गोली होती है जो असली मोतियों में नहीं होती है। इसके अलावा दोनों मोती का स्थायित्व एक समान होता है अर्थात इनकी मजबूती लगभग एक समान ही होती है। मोती रत्न अन्य सभी रत्नों की तुलना में अत्यधिक म्रदु होता है। इसलिये दबाव या घर्षण के प्रभाव में आने पर इसकी ऊपरी सतह पर प्रभाव पडता है। दबाव में यह टूट भी सकता है। अधिक तापमान में एसिड के संपर्क में आने पर यह खराब भी हो सकता है।

मूंगा

मूंगा यह मंगल ग्रह का रत्न है। इसका रंग लाल सिंदूरी होता है। यह खनिज नहीं अपितु जंतु की देन है। इसकी आकर्षक आभा और रंग के कारण इसे नवरत्नों में शामिल किया गया है। मूंगा अपारदर्शक होता है। अलग-अलग समुद्रों में मिलने के कारण इसके आकार, रंग-रूप, और चमक में फर्क होता है।

पके हुए बेल के समान मूंगा अति श्रेष्ठ होता है। गोल, लंबा, सीधा, चिकना और अपारदर्शक मूंगा भी उत्तम होता है। गड्ढे, धब्बे, तिल या लकीरों से रहित साफ, चमकदार मूंगा उत्तम होता है।

उत्तम कोटि के मूंगे को लेंस से देखने पर बिल्कुल समतल दिखाई देता है।

इसके विपरीत नकली मूंगे को लेंस से देखने पर मोटे-मोटे रवे स्पष्ट दिखाई देते हैं जो ढले हुए कांच के समान होते हैं। असली मूंगे को अगर शीशे पर रगड़ा किया जाए तो किसी भी तरह की आवाज नहीं आती है। इसके विपरीत नकली मूंगे को घिसने से शीशे के समान स्पष्ट आवाज आती है।

पन्ना

यह बुध ग्रह का रत्न है। इसमें दोष होना अनिवार्य है क्योंकि ये अक्सर षडभुजीय प्रिज्म के रूप में पाए जाते हैं। अगर इनकी कटाई की जाए तो ये खंडित हो जाते हैं। पन्ने का गहरे मखमली और घास के रंग का पन्ना सर्वोत्तम माना जाता है। इन्हें आभूषणों में जड़ते समय अत्यंत सावधानी की आवश्यकता होती है क्योंकि ये बहुत ही भंगुर होते हैं।

पन्ने की जांच इसलिए आवश्यक है कि कई बार नकली कांच को रसायनों से रंगकर पन्ने के समान बना दिया जाता है। गड्ढे या चीर से युक्त, दो रंगा, सुन्न, काले या पीले छींटों वाला, बुरबुरा और रुग्ण चमकहीन पन्ना नहीं धारण करना चाहिए।

उत्तम पन्ना हरे रंग का, चिकना, पारदर्शक या अर्धपारदर्शक तथा उज्ज्वल किरणों वाला होता है। यह अति उत्तम कोटि का माना जाता है। उत्तम पन्ना बिंदुरहित और पानीदार होता है। उत्तम कोटि के पन्ने का रंग कृत्रिम प्रकाश में भी हरा ही दिखाई देता है।

इमीटेशन की चीर शीशे की चीर के समान होती है। अगर असली रत्न को हल्दी के साथ घिसा जाए तो हल्दी का रंग नहीं बदलेगा। इसके विपरीत नकली पन्ने को हल्दी के साथ घिसने पर हल्दी लाल हो जाएगी। नकली पन्ने में पानी के बुलबुलों जैसे हवा के छोटे-छोटे बुलबुले यंत्र से देखने पर दिखाई देंगे।

पुखराज

पुखराज बृहस्पति ग्रह का रत्न है। शुद्ध पुखराज हल्के पीले रंग का चमकदार होता है। पुखराज सहज ही चिर जाता है। पुखराज हाथ में रखने पर भारी लगता है। इसकी छवि स्निग्ध और स्वच्छ होती है।

दाना बड़ा और परत रहित होता है। असली पुखराज मुलायम तथा चिकना होता है। इसका रंग कनेर के फूल के जैसा होता है। उत्तम कोटि के पुखराज को कसौटी पर घिसने पर उसके रगं और छवि में निखार आ जाता। जिस पुखराज के पीलेपन में कालिमा मिली हो या जो दोरंगा हो, चमकहीन हो और बालू के समान कर्कश हो वह, नकली होता है।

पुखराज रत्न के तीन रवे एक दूसरे के साथ समकोण बनाते हुए परंतु असमान कक्ष होते हैं और सामान्यतः प्रिज्म या त्रिभुज के आकार के होते हैं। उत्तम पुखराज की अपनी एक अलग चमक होती है। उच्च कोटि के पुखराज को रगड़कर आग उत्पन्न की जा सकती है। उत्तम पुखराज को अगर एक किनारे से कनिष्ठिका और अंगूठे से पकड़कर जोर से दबाया जाए तो यह छिटककर दूर जा गिरता है।

हीरा

हीरा यह शुक्र ग्रह का रत्न है। यह विभिन्न रंगों में पाया जाता है। हीरा विद्युत का कुचालक है। छः कोणों वाले हीरे के देवता इंद्र, शुक्ल वर्ण के यम, सर्प मुखाकार विष्णु, शंक्वाकार के वरुण और व्याघ्र के समान हीरे के देवता यम हैं।

हीरे की पहचान असली हीरे की पहचान निम्न प्रकार से की जा सकती है। असली हीरे में प्रविष्ट हुआ प्रकाश लगभग पूरा भीतर से लौट आता है।

हीरे से प्रकाश की किरण का इंद्र धनुषी रंगों का बिखराव अत्यधिक मात्रा में होता है। श्रेष्ठ हीरे की अपनी विशेष चमक-दमक होती है। ऐसी चमक अन्य किसी रत्न में नहीं होती है।

नीलम

नीलम यह शनि ग्रह का रत्न है। विभिन्न स्थानों से प्राप्त होने के कारण इसकी कठोरता भी भिन्न-भिन्न होती है। नीलम अर्धपारदर्शक और पारदर्शक दोनों होते हैं। नीलम की पहचान असली नीलम की पहचान निम्नलिखित हैं। नकली नीलम में रंगों की वक्र पट्टियां दिखाई देती हैं जबकि असली नीलम में रंगों की पट्टियां सीधी और षडभुजीय प्रिज्म के समान होता हैं। असली नीलम में

कुछ खनिज पदार्थ रहते हैं जो स्थान भेद के अनुसार भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। असली नीलम चिकना, चमकदार, साफ और मोर के पंख के समान आभा वाला होता है। असली नीलम को अगर मुट्ठी में पकड़ा जाए तो गर्मी का अनुभव होता है और कई बार रक्त का दबाव बढ़ जाता है। श्रेष्ठ नीलम के पास अगर कोई तिनका लाया जाए तो वह इससे चिपक जाता है।

गोमेद

गोमेद राहु ग्रह का रत्न है। ये पारदर्शक, पारभासक और अपारदर्शक होते हैं। गोमेद की पहचान गोमेद की पहचान निम्नलिखित है। सामान्यतः गोमेद उल्लू अथवा बाज की आंख तथा गोमूत्र के रंग के समान हल्के पीले रंग का होता है। असली गोमेद को 24 घंटे तक गोमूत्र में रखने से अगर गोमूत्र का रंग बदल जाए तो रत्न असली होता है। स्वच्छ, चिकना और भारी गोमेद उत्तम होता है तथा उसमें शहद के रंग की झाईं दिखाई देती है। इसकी स्पष्ट पहचान यह है कि इसमें दोहरावर्तन होता है।

लहसुनिया

लहसुनिया केतु ग्रह का रत्न है। उच्च कोटि के लहसुनिया रत्न को अगर हड्डी के ऊपर रख दिया जाए तो 24 घंटे के अंदर, हड्डी के आर-पार छेद हो जाता है। असली लहसुनिया में ढाई या तीन सफेद सूत होते हैं जो बीच में इधर-उधर हिलते रहते हैं। रत्न अपने चित्ताकर्षक रंग तथा चमकदार आभा के कारण हरेक आदमी का मन मोह लेते हैं। प्रकृति की देन ये रत्न संसार के प्रायः सभी देशों में पाए जाते हैं।

नवग्रहों के नौ रत्न और उपरत्न

राशि	स्वा. ग्रह	रत्न	उपरत्न
मेष	मंगल	मूंगा	सिंदुरिया, लाल हकीक, लाल आनेक्स, तामड़ा, लाल गोमेद
वृष	शुक्र	हीरा	सफेद हकीक, ओपल, स्फटिक, सफेद पुखराज, जरकन
मिथुन	बुध	पन्ना	पेरीडाट, हरा हकीक, आनेक्स, मरगज, फिरोजा
कर्क	चन्द्र	मोती	दूधिया हकीक, सफेद मूंगा, चन्द्रकांत मणि, सफेद पुखराज
सिंह	सूर्य	मणिक	सूर्याकांतमणि, स्टार माणिक्य, रतवा हकीक, तामड़ा लाल तुरमली
कन्या	बुध	पन्ना	पेरीडाट, हरा हकीक, आनेक्स, मरगज, फिरोजा
तुला	शुक्र	हीरा	सफेद हकीक, ओपल, स्फटिक, सफेद पुखराज, जरकन
वृश्चिक	मंगल	मूंगा	सिंदुरिया, लाल हकीक, लाल आनेक्स, तामड़ा, लाल गोमेद
धनु	गुरु	पुखराज	जरकन, पीला हकीक, सुनहैला, पीला गोमेद, बैरुज
मकर	शनि	नीलम	नीली लाजवर्त, कटैला, काला हकीक, काला स्टार,
कुम्भ	शनि	नीलम	कटैला, काला हकीक, काला स्टार, नीली लाजवर्त
मीन	गुरु	पुखराज	पीला हकीक, सुनहैला, पीला गोमेद, बैरुज
	राहु	गोमेद	हकीक
	केतु	लहसुनिया	व्याघ्राक्ष (टाईगर आई)

रत्न खरीदने के लिए निम्नलिखित सुझावों का पालन करना उपयोगी रहेगा :

शुभ दिन : ऐसे दिन का चयन करें जो रत्न वार से संबंधित हो जैसे - माणिक्य को रविवार के दिन। क्योंकि रविवार सूर्य का दिन है और माणिक्य सूर्य ग्रह का प्रतिनिधि ग्रह है, अतः सप्ताह के बाकी दिनों के अतिरिक्त रविवार को माणिक्य खरीदा जाए तो अच्छा है।

शुभ तिथि : इस बात का विशेष ध्यान रखा जान चाहिए कि तिथि का क्षय न हो रहा हो।

शुभ समय : सूर्य के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि दोपहर के १२ बजे के आसपास जब सूर्य आकाश में ठीक मध्य में होता है, उस स्मय उसके प्रकाश के समक्ष अन्य सभी मुहूर्त आदि नगण्य हैं और गौण हो जाते हैं, अर्थात सूर्य ही सर्वाधिक प्रबल होता है, अतः पौने बारह से सवा बारह बजे के मध्य माणि ाक्य खरीदना चाहिए।

विशेष : राहु काल में कोई भी रत्न नहीं खरीदना चाहिए।

शुभ दिशा : सिंह राशि की दिशा पूर्व है, इसलिए रत्न धारण करने वालों को चाहिए कि वे अपने घर से पूर्व दिशा की ओर जाकर रत्न खरीदें। जैसे - माणि ाक्य रविवार के अतिरिक्त सोमवार और गुरुवार को भी खरीदा जा सकता है।

विशेष : अंगूठी धारण करने से पहले उसे गंगाजल अथवा कच्चे दूध में डूबोकर रखना चाहिए, तत्पश्चात उस गंगाजल व दूध को पौधों में डाल दें। रविवार के अतिरिक्त माणिक्य बनवाने के लिए जिन वारों का प्रयोग करना चाहिए। वे रविवार (सूर्य) के मित्र ग्रहों के प्रतिनिधि वार होने चाहिए जो इस प्रकार हैं :

वार	ग्रह	प्रतिनिधि ग्रह	वार	ग्रह	प्रतिनिधि ग्रह
सोमवार	चंद्रमा	मोती	गुरु	गुरु	पुखराज
मंगलवार	मंगल	मूंगा	शुक्रवार	शुक्र	हीरा
बुधवार	बुध	पन्ना	शनिवार	शनि	नीलम

रत्न कितने वजन में बनवाएं

किसी भी रत्न को धारण करने से पूर्व उसके वजन को लेकर जातक में मन में संशय रहता है कि रत्न का सही वजन कितना होना चाहिए। रत्न के वजन के विषय में वार्ता प्रारंभ करने से पूर्व वजन से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त करना आवश्यक हैं :

प्राचीन मान्यताओं के अनुसार प्रत्येक मनुष्य बढ़ते क्रम को ही महत्वपूर्ण मानता है जिसके पीछे छिपी मानसिकता का कारण स्पष्ट के प्रत्येक मापदंड बढ़ए क्रम की ओर ही बढ़ता है। अतः बढ़ते क्रम के वजन के ही सदैव मान्यता दी जाती है। सवाया और ड्योढ़ा बढ़ता क्रम माना जाता है जबकि पौना वजन घटते क्रम की ओर संकेत करता है।

रत्न धारणकर्ता अर्थात जातक को चाहिए कि वह अपने शरीर के वजन को 12 से भाग करें। इस प्रकार जो वजन आए उतने रत्ती का सवाए वजन का चयन कर रत्न धारण करें। पुरुषों को सवा छः रत्ती कम से कम एवं स्त्रियों को कम से कम सवा पांच रत्ती का माणिक्य धारण करना चाहिए।

विशेष : वजन का निर्धारण करते समय किसी प्रकार का समझौता नहीं करना चाहिए। शारीरिक वजन और अनुपात के मापदंड अनुसार ही किसी भी रत्न के वजन का निर्धारण किया जाना उचित होता है। वजन निर्धारन हेतु अनेकानेक विकल्प उपलब्ध हैं।

जहां एक ओर लोग महादशाओं के वर्ष के आधार पर वजन का निर्धारण करते हैं तो दूसरी ओर जातक की वर्तमान आयु द्वार अभी इसका निर्धारण किया जाता है। इसी प्रकार जातक की कुंडली में जिस भाव का उपाय करने हेतु रत्न धारण किया जाता है। उसके आधार पर भी वजन का चयन किया जाता है।

रत्न किस धातु में जड़वाकर धारण करे।

रत्न धारण प्रक्रिया में भिन्न भिन्न रत्नों को भिन्न-भिन्न धातुओं में जड़वाकर धारण करने के पीछे छिपी वैज्ञानिकता यही है कि रत्न चिकित्सा और धातु स्पर्श चिकित्सा दोनों का ही लाभ प्राप्त हो सके।

उदाहरणार्थ इसे इस प्रकार स्पष्ट करते हैं कि मोती चंद्रमा ग्रह का प्रतिनिधित्व करता है। इसे धारण करने हेतु चांदी की अंगूठी में जड़वाने की सलाह दी जाती है क्योंकि चांदी भी चंद्रमा ग्रह का प्रतिनिधित्व करती है, इससे धातु और रत्न का परस्पर संयोजन दोगुना लाभकारी होगा।

इसके विपरीत किया जाए तो उसका लाभ नहीं होगा क्योंकि तांबा मंगल की प्रतिनिधि धातु है और मंगल एक क्रूर ग्रह माना जाता है, जबकि मोती से संबंधित चंद्रमा एक शांत और शीत ग्रह है। यही नियम अन्य रत्नों एवं उनसे संबंधित धातुओं पर भी समान रुप से लागू होता है। लोहे का शनि से संबंध जग जाहिर है, इसे सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है।

रत्न	**धातु**	**अँगुली**	**वार**
माणिक्य	ताँबा	अनामिका	रवि
मोती	चाँदी	कनिष्ठा	सोम
मूँगा	ताँबा	अनामिका	मंगल
पन्ना	काँसा, पीतल	कनिष्ठा	बुध
पुखराज	पीतल, सोना	तर्जनी	गुरु
हीरा	चाँदी	तर्जनी	शुक्र
नीलम	लोहा, चाँदी	मध्यमा	शनि
गोमेद	सोना, पंचधातु	मध्यमा	शनी
लहसुनिया	सोना, अष्टधातु	मध्यमा	बुध

विधि पूर्वक शुभ मुहूर्त में रत्न प्राप्त करके शुभ मुहूर्त में उचित धातु में बनवाये तथा उचित दिन व अँगुली में ही रत्न धारण करने से रत्न का चमत्कारी प्रभाव होता है।

रत्न धारण विधि

लाभ प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि रत्नों को नियम और शास्त्र सम्मत विधि के अनुसार धारण किया जाए तो आइए आज इसी विषय पर चर्चा करते हैं कि किसी भी रत्न को धारण करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए। रत्न धारण से पहले रत्न का शुद्धिकरण तथा प्राण-प्रतिष्ठित होना आवश्यक है।

इससे रत्न जागृत होकर शुभ फल देने लगता है। साथ ही इससे रत्न प्रत्येक प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा से मुक्त भी हो जाता है तत्पश्चात विशेष विधियों से रत्न की प्राण प्रतिष्ठा की जाती है। शुद्धिकरण तथा प्राण-प्रतिष्ठा होने के पाह्चात रत्न की सकारात्मक प्रभाव देने की क्षमता बढ़ जाती है।

रत्न प्रत्येक प्रकार की संभव अशुद्धियों तथा नकारात्मक उर्जा से मुक्त हो जाता है। शुद्धिकरण तथा प्राण प्रतिष्ठा हो जाने पर अंगूठी को प्राप्त कर लेने के पश्चात इसे धारण करने से 24 से 48 घंटे पहले किसी कटोरी में गंगाजल अथवा कच्ची लस्सी में डुबो कर रख दें।

कच्चे दूध में आधा हिस्सा पानी मिलाने से आप कच्ची लस्सी बना सकते हैं किन्तु ध्यान रहे कि दूध कच्चा होना चाहिए अर्थात इस दूध को उबाला न गया हो। गंगाजल या कच्चे दूध वाली इस कटोरी को अपने घर के किसी स्वच्छ स्थान पर रखें।

उदाहरण के लिए घर में पूजा के लिए बनाया गया स्थान इसे रखने के लिए उत्तम स्थान है। किन्तु घर में पूजा का स्थान न होने की स्थिति में आप इसे अपने अतिथि कक्ष अथवा रसोई घर में किसी उंचे तथा स्वच्छ स्थान पर रख सकते हैं।

यहां पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस कटोरी को अपने घर के किसी भी शयन कक्ष में बिल्कुल न रखें। यह क्रिया रत्न धारण से पूर्व के दिन में करना है। इसके बाद रत्नों को धारण करते समय निम्न विधि का पालन करें :

माणिक्य रत्न धारण विधि

सूर्य के रत्न माणिक्य को रविवार या वीरवार के दिन अंगूठी में जड़वाएं। रत्न को शरीर का स्पर्श अवश्य करना चाहिये। अंगूठी को कच्चे दूध, गंगाजल में 24 घंटे डुबोकर रखें और ॐ घृणिः सूर्याय नमः या ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः मंत्र का 7 हजार बार जप करके/शुद्ध करके रवि पुष्य योग या शुक्ल पक्ष के रविवार को धारण करें। रत्न धारण करते समय आर्द्रा व मूल नक्षत्रों का ध्यान रखें। इसकी अंगूठी दाहिने हाथ की तर्जनी व अनामिका अंगुली में धारण करें।

मोती रत्न धारण विधि

जन्मकुंडली के अनुसार मोती धारण करते समय ध्यान रखें कि मोती शुक्ल पक्ष के सोमवार की रात को चंद्रमा के दर्शन करके धारण करें। मोती सोमवार को ही अंगूठी में जड़वाएं। चांदी की अंगूठी में और 11 हजार मंत्रों का जाप करें। मंत्र - ॐ सों सोमाय नमः का जाप करें। रत्न धारण करते समय रोहिणी, श्रवण व हस्त नक्षत्र हों तो अत्यंत शुभ है। राहु और केतु के नक्षत्र में मोती धारण न करें।

मूंगा रत्न धारण विधि

मूंगा रत्न सोमवार, रविवार, मंगलवार व वीरवार को जड़वाएं। रत्न शरीर को स्पर्श करना चाहिए। रत्न धारण करने से पहले गंगाजल और कच्चे दूध में डुबोकर रखना चाहिए और ॐ अं अंगारकाय नमः का दस हजार बार जाप करके, शुद्ध करके हनुमान जी के दर्शन करके धारण करना चाहिए। मंगल के नक्षत्रों मृगशिरा, चित्रा व धनिष्ठा में धारण करें। शुक्ल पक्ष के मंगलवार को सूर्योदय के पश्चात धारण करें। अत्यंत लाभ होगा।

पन्ना रत्न धारण विधि

बुध का रत्न पन्ना अनेक विशेषताओं से युक्त होता है। यह रत्न सोने और चांदी दोनों धातुओं में पहना जाता है। पन्ना शुक्ल पक्ष के बुधवार को या बुध के नक्षत्र अश्लेषा, ज्येष्ठा व रेवती में धारण करें। धारण करने से पहले रत्न जड़ित अंगूठी को कच्चे दूध व गंगाजल में 24 घंटे रखें और ॐ बुं बुधाय नमः को नौ

हजार बार जाप कर शुद्ध करें और फिर दाहिने हाथ की सबसे छोटी अंगुली में धारण करें। गणेशजी के दर्शन करें।

पुखराज रत्न धारण विधि

बृहस्पति के रत्न पुखराज को शुक्ल पक्ष के वीरवार को सोने की अंगूठी में जड़वाएं। 5 रत्ती से कम का पुखराज धारण करने से कोई लाभ नहीं होता। पुखराज को धारण करने से पहले कच्चे दूध या गंगाजल में डुबोकर रखना चाहिए और फिर शुक्ल पक्ष के वीरवार को ॐ बृं बृहस्पतये नमः मंत्र से 19000 बार जाप करके शुद्ध करके दाहिने हाथ की तर्जनी अंगुली में धारण करें। पुखराज बृहस्पतिवार को सवेरे सूर्योदय के पश्चात धारण करने से अनेक शुभ फलों की प्राप्ति होती है। पुखराज शुक्ल पक्ष के बृहस्पतिवार या गुरु पुष्य योग में धारण करने से उसकी शुभता बढ़ती है।

हीरा रत्न धारण विधि

हीरा शुक्र के रत्न हीरे को शुक्ल पक्ष के शुक्रवार को ही अंगूठी में जड़वाना चाहिए। जो जातक हीरा महंगा होने के कारण पहनने में असमर्थ हों वे इसका उपरत्न जिरकन और ओपल पहन सकते हैं। हीरा चांदी धातु में ही जड़वाना ज्यादा शुभ होता है और धारण करने से पहले ॐ शुं शुक्राय नमः मंत्र का 16000 बार जाप करके, शुद्ध करके शुक्रवार को सवेरे या शाम को दाहिने हाथ की बीच वाली अंगुली में धारण करें।

नीलम रत्न धारण विधि

शनि के रत्न नीलम को बहुत ही सावधानी से धारण करना चाहिए। नीलम रत्न धारण करने से पहले किसी विद्वान ज्योतिषी से सलाह अवश्य लें अन्यथा भारी परेशानी में फंसने की संभावना हो जाती है। शनि रत्न नीलम शनिवार के दिन पंचधातुध्चांदी की धातु में जड़वाना चाहिए और सबसे ज्यादा 23000 मंत्रों से शुद्ध करके दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए। मंत्र इस प्रकार है : ॐ शं शनैश्चराय नमः। नीलम शनिवार सवेरे शाम को धारण करना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण विधि

राहु के रत्न गोमेद को शनिवार के दिन पंचधातु की अंगूठी में जड़वाएं। अंगूठी को ॐ रां राहवे नमः मंत्र से 18000 बार जप कर शुद्ध कर लें और शनिवार शाम को या सवेरे दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें। यह रत्न वकालत करने वाले जातकों के लिए अत्यंत लाभदायक सिद्ध होता है।

लहसुनिया रत्न धारण विधि

केतु के रत्न लहसुनिया को शनिवार को अष्टधातु की अंगूठी में जड़वाएं। शुक्ल पक्ष के शनिवार को सुबह या शाम धारण करें। धारण करने से पहले ॐ कें केतवे नमः मंत्र से 17000 बार जप करें और शुद्ध करके धारण करें। गणेशजी की आराधना करते रहें और कुत्तों की सेवा करते रहें, लाभ होगा।

रत्न कब तक पहनें

कोई भी रत्न तीन साल तक ही पूर्णतया फल देने में सक्षम है। केवल हीरा पूर्ण काल तक पूरे फल देता है। अतः आवश्यक है कि तीन वर्ष बाद हम रत्न बदल लें, या उस रत्न को उतार कर रख दें एवं कुछ साल बाद दोबारा पहनें, या रत्न किसी और को दे दें। यदि आपका वांछित कार्य हो गया हो, या दशा बदल गयी हो, तो भी रत्न उतार देना चाहिए।

रत्न उतारने की विधि

आम तौर पर लोग रत्न को उतारने के लिए समय आदि पर ध्यान नहीं देते हैं। ऐसा नहीं करना चाहिए। रत्न को उसके वार के दिन ही उतार कर रखना चाहिए। उतार कर उसे गंगा जल में धो कर सुरक्षित स्थान पर रखें एवं उसके बाद उस ग्रह की वस्तुओं का दान करें। यदि रत्न खो जाए, या चोरी हो जाए, तो समझें कि ग्रह के दोष खत्म हुए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए, तो समझें कि ग्रह बहुत प्रभावशाली है। उसकी शांति भी करवाएं। यदि रत्न का रंग फीका पड़े, तो ग्रह का असर शांत हुआ समझें।

रत्न और उनके मंत्र

रत्न	रत्ती	अंगुली	दिन	मंत्र
माणिक्य	5 से 8	अनामिका	रवि.	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः
मोती	3 से 9	कनिष्ठा	सोम.	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चंद्राय नमः
मूंगा	4 से 12	अनामिका	मंगल.	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः
पन्ना	3 से 7	कनिष्ठा	बुध.	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः
पुखराज	4 से 8	तर्जनी	गुरु.	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः
हीरा	9 से 10	अनामिका	शुक्र.	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः
नीलम	4 से 7	मध्यमा	शनि.	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः
गोमेद	6 से 13	मध्यमा	शनि.	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः
लहसुनिया	3 से 7	अनामिका	बुध.	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः

रत्न की आयु और साथ में वर्जित रत्न

ग्रह	रत्न	रत्न की आयु	साथ में वर्जित रत्न
सूर्य	माणिक्य	4 साल	हीरा, नीलम, गोमेद
चंद्र	मोती	2¼ साल	गोमेद, लहसुनिया
मंगल	मूंगा	3 साल	हीरा, नीलम, गोमेद
बुध	पन्ना	4 साल	मोती
गुरु	पुखराज	4 साल	हीरा, नीलम
शुक्र	हीरा	7 साल	माणिक्य, मूंगा, पुखराज
शनि	नीलम	5 साल	माणिक्य, मूंगा, पुखराज
राहु	गोमेद	3 साल	माणिक्य, मोती, मूंगा
केतु	लहसुनिया	3 साल	मोती